श्री सुदर्शन संदेश

15/-
जुलाई 2022
वर्ष: 19 अंक: 8

श्री सिद्धदाता आश्रम में आनन्दोत्सव

श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुण्ठवासी श्री गुरु महाराज जी का जन्मोत्सव आनन्दोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी 27 मई को बड़ी ही धूमधाम और भाव में मनाया गया। इस अवसर पर हमारे वर्तमान परम पूज्य श्री गुरू महाराज जी अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने 1-वैकुण्ठवासी बाबा की प्रतिमा का अभिषेक किया और 2- उनकी समाधि पर अर्चना की, वहीं 3- श्री गुरु महाराज ने भक्तों को प्रवचन दिए और शिष्यों ने भी उनका जोरदार स्वागत किया 4-बाबा की समाधि को सजाया गया 5- पूजा अर्चना की गई 6- भक्तों ने भागीदारी की 7- विधायक राजेश नागर भी सम्मिलित हुए।

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

जीवन में आपको आगे बढ़ना है, खूब बढ़िए। लेकिन पता है कि आपको आगे बढ़ने के बाद क्या करना है। आपको भगवान को नहीं भूलना है। किसी भी काम को करने से पहले, पूरा करने के बाद भी भगवान का नाम लो। उनका धन्यवाद करो। बोलो-भगवान आपने मेरा जीवन अच्छा बनाया, आगे भी अच्छा बनाना। मुझ पर अपनी कृपा रखना, नाथ। मैं तुम्हें हमेशा अपने दिल में रखता हूं नाथ। मैं तुम्हें न भूलूं। बस अपनी दया रखना।

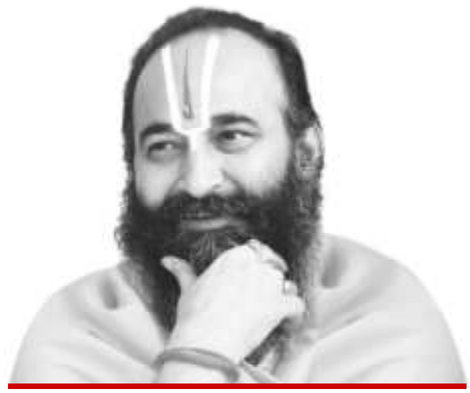

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

अधिपति– श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरु अमृत है जगत में, बाकी सब विषबेल,
सतगुरु संत अनंत हैं, प्रभु से कर दें मेल।

वर्षः 19, अंकः 8 हिन्दी मासिक

जुलाई 2022

संरक्षक :
अनन्त श्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

सलाहकारः डी. सी. तँवर

प्रकाशक : जनहित मानव कल्याण केन्द्र

पत्राचार : श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम,
श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल–सूरजकुण्ड मार्ग,
फरीदाबाद–121003 (हरियाणा)

दूरभाष : 9910907109

E-mail : shrisidhdataashram.org@gmail.com
website : www.shrisidhdataashram.org

वैधानिक : न्यायक्षेत्र दिल्ली ही होगा।

स्वत्वाधिकारी जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–95, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित एवं ई–9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित।

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर' (9911161753)

कृपया श्री सुदर्शन संदेश में प्रकाशन के लिए अपनी शिकायतें, सुझाव, लेख, संस्मरण या अनुभव पत्राचार के पते यानि श्री सिद्धदाता आश्रम को भेजें। आप इन्हें आश्रम की ईमेल पर भी भेज सकते हैं।

अनुक्रमणिका

1. श्रीगुरुगीता : गुरुदेव का चरणामृत लाता है जीवन में प्रकाश
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 5
2. संपादकीय : करने से पहले दो बार सोच लो
शकुन रघुवंशी श्रीधर 06
3. कलियुग जैसा युग नहीं आएगा
श्री वैकुंठवासी गुरू महाराज जी ...8
4. लक्ष्य को सर्वोपरि रखें
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 12
5. संस्कार : चूड़ाकर्म या मुंडन संस्कार 27
6. साधक और परमात्मा को मिलाते हैं गुरु
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 28
7. भगवान का वामन अवतार 38
8. गुरु परम्परा का प्रभाव 40
9. श्री रामानुज जन्म 42

छायाचित्र

⏭ श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में परमपूज्य श्रीगुरुमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के चरण पखारते भक्तजन।

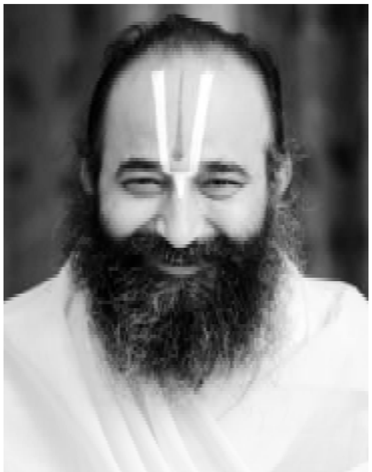

गुरूदेव का चरणामृत लाता है जीवन में प्रकाश

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति–श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरूगीतामिमां देवि भवदुःखविनाशिनीम्। गुरूदीक्षाविहीनस्य पुरतो न पठेत्क्वचित्।।207।।
रहस्यमत्यन्तरहस्यमेतन्न पापिना लभ्यमिदं महेश्वरि। अनेकजन्मार्जितपुण्यपाकाद् गुरोस्तु तत्वं लभते मनुष्यः।।208।।
सर्वतीर्थावगाहस्य सम्प्राप्नोति फलं नरः। गुरोः पादोदकं पीत्वा शेषं शिरसि धारयन्।।209।।
गुरूपादोदकं पानं गुरोरूच्छिष्टभोजनम्। गुरूमूर्तेः सदा ध्यानं गुरोर्नाम्नः सदा जपः।।210।।

अर्थात् *भवदुख का नाश करने वाली इस गुरूगीता का पाठ गुरू दीक्षा विहीन मनुष्य के आगे नहीं करना चाहिए। हे देवि, यह अत्यन्त गुप्त रहस्त है। पापियों को यह नहीं मिलता। अनेक जन्मों के किए हुए पुण्यों के परिपाक से ही मनुष्य गुरूतत्व को प्राप्त कर सकता है। सद्गुरूदेव के चरणामृत का पान करने और उसे मस्तक पर धारण करने से मनुष्य सर्व तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त करता है। गुरू के चरणामृत का पान करना, गुरूदेव के भोजन में से बचा हुआ खाना, गुरूदेव की मूर्ति का ध्यान करना और गुरूनाम का जप करना चाहिए।*

व्याख्या : *भगवान शिव माता पार्वती को गुरूदेव के चरणामृत का महत्व बता रहे हैं कि कैसे वह अमृत शिष्य के जीवन में सकारात्मकता का प्रकाश लेकर आता है।*

क्रमशः जारी

गीली मिट्टी अनगढ़ी, हमको गुरुवर जान,
ज्ञान प्रकाशित कीजिए, आप समर्थ बलवान।

करने से पहले दो बार सोच लो

शकुन रघुवंशी श्रीधर

एक व्यक्ति शर्त लगा रहा था कि मैं तुम्हें पूरी जिंदगी गलती करने से बचा सकता हूं। मेरे पास एक मंत्र है, जो मैं तुम्हें दे सकता हूं। लेकिन शर्त यही है कि वह मंत्र मैं तुम्हें पांच सौ रुपये में दूंगा और यदि तुमने मेरा मंत्र छोड़ा तो मुझे पांच लाख रुपये देने होंगे। तभी वो काम करेगा। सब चौंक रहे थे लेकिन वो तो बोर्ड लगाकर बैठा था। जिसका उसकी शर्त स्वीकार हो वो जाए उसके पास। शर्त कड़ी थी लेकिन कोई उसके पास जाए न। चाहते सभी हैं कि वह अपने जीवन में कोई गलती न करें।

ध्यान रखें कि वह गलत करने से नहीं रोक रहा है, गलती करने से रोक रहा है।

एक दिन एक उद्योगपति उसके पास आया कि मुझे चाहिए वो मंत्र। मैं अपने जीवन में कोई भी गलती नहीं करना चाहता। इसलिए वो मंत्र मुझे दो। मंत्र देने वाला बोला, दो बार सोच लो। बाद में बहाने नहीं बनाना। उद्योगपति बोला, सोच लिया।

उस आदमी ने एक एग्रीमेंट साइन करवाया। जिसमें स्पष्ट लिखा था कि दिया हुआ मंत्र मानूंगा और न मान पाऊं तो पांच लाख रुपये दण्ड भुगतने के लिए तैयार हूं।

सबकुछ हो गया। एग्रीमैंट साइन हो गया।

वह आदमी उद्योगपति से बोला कि लाओ कान मेरे नजदीक लाओ। मैं तुम्हें मंत्र बताता हूं।

फिर उस आदमी ने उद्योगपति के कान में कहा कि कोई भी कार्य करने से पहले दो बार सोचना। उसके बाद ही काम करना। उद्योगपति नाराज हो गया। इतनी सी बात के 500 रुपये ले लिए।

चलो कोई बात नहीं। इसे मैं हमेशा मानूंगा।

उद्योगपति यह कहकर चला गया। लेकिन दो दिन बाद लौटकर आया कि मेरे पांच सौ रुपये वापिस दो। तुम्हारा मंत्र गलत था। यह काम नहीं करता है। वह बहुत चिल्ला रहा था।

मंत्र देने वाला व्यक्ति बड़ा कूल नजर आ रहा था। बोला- हुआ क्या है। बताओगे भी।

उद्योगपति बोला, हुआ क्या है। मैं तो लुट गया। तुम्हारे मंत्र पर भरोसा करके मैं जुआ खेलने चला गया। वहां बहुत सारा पैसा हार गया। लाओ, मेरे पांच सौ रुपये वापिस लाओ। मेरे साथ बहुत गलत हुआ है।

मंत्र देने वाला व्यक्ति बोला, आप मुझे पांच लाख रुपये दो। क्योंकि आपने एग्रीमैंट तोड़ा है। आपने जुआ खेलने से पहले दो बार सोचा, आपने हर बाजी लगाने से पहले दो बार सोचा क्या।

उद्योगपति बोला-नहीं। इसमें क्या सोचने वाली बात है। तुमने ही तो कहा था कि यह गलती नहीं करने देता है। तो गलती कैसे हो गई।

मंत्र देने वाला व्यक्ति बोला, मंत्र गलती रोकने के लिए है, गलत रोकने के लिए नहीं। जुला खेलना गलती नहीं है, गलत है। इसे तो बिना मंत्र वालों को भी नहीं करना चाहिए। इसलिए मंत्र इसे नहीं रोकता। यह तो सबको पता होता है कि जुआ खेलना कितना गलत होता है। दूसरी बात यह है कि आपने बार बार जुआ खेला, कभी भी दो बार नहीं सोचा कि खेलूं या न खेलूं। यदि आप दो बार सोचते तो बाजी ही नहीं खेलते और न पैसे हारते।

उद्योगपति के समझ आ गया था। एग्रीमैंट के अनुसार उसे पांच लाख रुपये मंत्र देने वाले को देने पड़े और उसने आगे से दो बार सोचने का प्रण लिया।

हमारे जीवन में भी ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हम सोच विचार नहीं करते हैं और उसके नतीजे बड़े भयानक होते हैं।

एक लड़का लड़की ने आपस में विवाह कर लिया। लड़की को लगता था कि लड़का बड़े पैसे वाला है, कुछ न कुछ कर ली लेगा। लड़के को लगता था कि लड़की बड़ी इंटेलिजैंट और घर परिवार निभाने वाली है। मेरा जीवन अच्छा चलेगा। लेकिन न तो लड़का पैसे वाला निकला। लड़की भी अकेले ही रहना चाहती थी, उसे परिवार तो जैसे काटने दौड़ता था। नहीं निभी। आप समझ सकते हैं कि ऐसी जिंदगी में क्या हो सकता था, सो हुआ।

मतलब साफ है कि दोनों इस निर्णय तक आने से पहले दो बार सोच लेते तो इतनी परेशानी न उठानी पड़ती। इसीलिए हमारे समाज में विवाह से पूर्व दो व्यक्तियों नहीं, बल्कि उनके परिवारों को भी देखा जाता है। हालांकि इसके बाद भी मन विचार मेल खाने में दिक्कत आ सकती है, लेकिन आशंका घट जाती है।

साथियो, यह जीवन है। इसे जीना है और शानदार ढंग से जीना है। इसके लिए गुरुदेव ने एक कुंजी बताई है कि कुछ भी करने से पहले भगवान और गुरु को हाजिर नाजिर मानकर निर्णय करें। संभावना है कि आशंकाएं होंगी भी तो मिट जाएंगी। वह कहते हैं कि तिजोरी में से धन खर्च के लिए निकालें तो भगवान और गुरुदेव को याद कर लें कि फलां काम के लिए ले जा रहा हूं। सफलता प्रदान करना। खुशियां प्रदान करना। यकीन मानिए यदि गुरु पर, भगवान पर भरोसा है तो आप उस पैसे को गलत जगह पर लगा ही नहीं सकोगे। लुटने पिटने की तो बात बहुत दूर है। **जय गुरुदेव!**

श्री गुरूजी उवाच:
(साधना खण्ड)

कलियुग जैसा युग नहीं आएगा

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

..गत अंक से जारी

कलियुग का चित्रण पुराणों में मिलता है । ऋषि मुनि व कवियों ने कलि के दुष्प्रभाव का विस्तार से वर्णन किया है। अब हम स्वयं गली-गली, घर-घर में कलिकाल का घोर प्रदर्शन देख रहे हैं । इस युग में सत्य और पवित्रता के लिए कोई स्थान ही नहीं। अतः भगवद्भजन ही तुम्हें इन घोर यातनाओं से मुक्त कर सकते हैं।

पर सच शुचिता को ठौर नहीं,
राम नाम के बिना साधन और नहीं ।

(सन्त-वाणी)

ग्राहक कलियुग के आरम्भ में ही आम आदमी का आचरण भ्रष्ट हो गया। नैतिकता का पतन हो चुका है। भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहरी पैठ गईं। सुवर्ण, सुन्दरी और सुरा के सागर में आज का मानव आत्महत्या के रास्ते पर चल पड़ा है। सम्बन्धों में स्नेह समाप्त हो गया है और स्वार्थ सिर चढ़कर बोल रहा है। अनाचार और व्यभिचार को देखकर हर आदमी आँखें मूद लेता है। न पवित्रता है और न आदर्श। न कर्तव्य और न ही निष्ठा। आम आदमी अपने जन्म के उद्देश्य से भटक कर अनाचार की ओर बढ़ रहा है। विश्वास कहीं खो गया है। आत्मीयता का लकवा मार गया है। ममता अपने सुख के लिए सन्त बिका भी, और बुरा सोचने भी लगा हैं। इस घोर युक में दया, धर्म, करुणा आदि

सभी पाखण्ड की श्रेणी में आते हैं। केवल अहंकार ही उसका मित्र है। ऐसे घोर युग में रहने वालों के लिए भगवान ने उपाय बता दिया है। यदि आपसे यह भी नहीं सम्भव नहीं है, कोई अन्य साधन या दुःखहर भी नहीं है।

प्रभु की मानसी सेवा ही सर्वोपरि धर्म, कर्तव्य, साधना, जप, तप, यज्ञ और उपासना है। इसमें श्रद्धा भाव और संकल्पशक्ति का समन्वय होने पर आपके समस्त पापों, दुष्कर्मों का विनाश हो जाता है और आपको प्रभु के चरणों में स्थान मिल जाता है। उनकी कृपा से भव-बन्धन से भी मुक्ति मिल पाती है।

श्रीराम जी अथवा श्रीकृष्णजी के नाम और गुणगान की महिमा अपार और अवर्णनीय है। परमात्मा ने कितना सहज युग कर दिया है। कलियुग के नाम से हम भयभीत हो रहे हैं। भय ग्रस्त हैं अथवा नहीं, परन्तु एक बहाना मिल गया है। हमने इस बहाने को अपना कारण बना लिया। हम सरल से शब्दों में कह देते हैं– क्या करें महाराज! कलियुग आ गया, अब कलियुग में क्या होगा जी?

मेरे प्रेमियो! इस प्रकार बहाना बनाने मात्र से हमारी जीवन नौका पार नहीं हो सकती। बहाना नहीं, सच्चाई को खोजो कि कलियुग के समान क्या और कोई युग भी आयेगा अथवा नहीं आयेगा? ऐसा युग कभी नहीं आयेगा जिसमें नाम मात्र से ही भगवद् प्राप्ति होती है, कलियुग में मन से किए हुए पुण्य काम आ जायेंगे। किन्तु पापों का क्या होगा। मन से किये हुए पाप नहीं लगते। सहज में ही परमात्मा की प्राप्ति केवल विमल यश का गुणगान अर्थात् परमात्मा के नाम का कीर्तन करने से हो जाएगी।

माया नर्तकी

बहाना नहीं, सच्चाई को खोजो कि कलियुग के समान क्या और कोई युग भी आयेगा अथवा नहीं आयेगा ? ऐसा युग कभी नहीं आयेगा।

परमात्मा की माया नर्तकी है, जो प्रत्येक जीव को नृत्य कराती रहती है। परमात्मा और जीव के मध्य माया ही व्याप्त है, जो जीव को परमात्मा के साक्षात्कार करने से रोकती है। नर्तकी का काम है स्वयं भी नृत्य करे और जगत को भी नृत्य करायें। जैसे आजकल आप देखते हैं कि डिस्को नृत्य होता है। स्वयं भी नृत्य करें और औरों को भी नचावें। इस तरह परमात्मा की माया का नाम नर्तकी है और वह माया नर्तकी समस्त जीवों को नृत्य कराती रहती है।

इस नर्तकी शब्द का उल्टा अक्षर पढ़ो, एक समुचित शब्द बनता है – कीर्तन। नर्तकी भौतिकता और विलासिता के क्षेत्र में सम्मोहन के प्रति आकर्षित करती है और विपरीत अक्षर कीर्तन इस माया के सम्मोहन का विकर्षण मंत्र है। कीर्तन के माध्यम से अर्थात् अनन्य भाव से भक्त भजन करने पर माया का कुहरा समाप्त हो जाता है। वह नर्तकी, वह माया कीर्तन के माध्यम से ही रुक सकती है, अन्यथा उसके प्रभाव को रोकना सहज नहीं है। कीर्तन ही एक सत्य उपाय है, जिसके माध्यम से माया का मोहान्ध आवरण चीर कर चेतना के चैतन्य को भगवान की ओर प्रेरित किया जा

सकता है। अन्य कोई साधन नहीं है, उपाय नहीं है, उपचार नहीं है।

कलियुग में परमात्मा के दर्शन और सान्निध्य के लिए बहुत प्रकार के साधनों के विधान दिये गए हैं। नानाविध जप यज्ञ, उद्योग आदि किए गए, किन्तु माया का आवरण नहीं हट पाया। कठोर परिश्रम या उद्योग से परम प्रभु के दर्शन सम्भव नहीं है। कीर्तन के माध्यम से सहज रूप में ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। सरलता के साथ भगवान के दर्शन हो जाते हैं। मायामयी नर्तकी के मोहपाश को भंग करने के लिए आप कीर्तन आरम्भ कर दें, भगवान का नाम लें, भगवत स्मरण करें और अनन्य भाव से प्रभु की भक्ति में, अपने आपको समर्पित कर दीजिए। माया अपना मोहपाश सिमेटने के लिए तैयार रहेगी। प्रभु के कीर्तन, भक्ति भाव से भजन, आत्म समाधि के साथ गुणानुवाद करने से माया नर्तकी स्वत: मोहपाश को उतार कर अपना मायावी नृत्य बन्द कर देंगी। क्योंकि माया के पति परमात्मा हैं। जब आप मायापति की पूजा, प्रार्थना, शरण प्राप्त कर लेंगे, मायापति के आदेश को मानने के लिए माया बाध्य है।

जब आप मायापति परम प्रभु का स्मरण, कीर्तन कर रहे हैं, बेचारी माया अपने पति से विद्रोह कैसे कर सकती है। उसे अपने पति के अनुशासन में रहकर पातिव्रत्य निभाना ही पड़ेगा। वह माया हमारे सामने मोहपाश नहीं फैलाएगी, क्योंकि पति का सम्मान और आदेश सर्वोपरि है। पति के कहने के अलावा वह कुछ भी नहीं करने में समर्थ है। मायापति कभी भी जीवों को व्यथित करने हेतु नहीं कहेंगे।

जब तक जीव माया से बंधा रहता है, तभी तक माया उसे नचाती रहती है। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मात्सर्य का शरीर में साम्राज्य रहता है। जीव

श्री सुदर्शन संदेश के सदस्य बनें और दूसरों को भी सदस्य बनाएं

'श्री सुदर्शन संदेश' के सदस्य बनकर भगवान श्रीमन् नारायण के लीला चरित्, श्री गुरु महाराज जी के आध्यात्मिक प्रवचन, विचार व अन्य आध्यात्मिक शास्त्रीय जानकारी घर बैठे प्राप्त करें। आपको श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना व समाचार भी निरंतर प्राप्त हो सकेंगे।

एक पत्रिका का मूल्य 15 रुपये है। वर्ष का मूल्य 180 रुपये बनता है। लेकिन आप वार्षिक शुल्क केवल 100 रुपये देकर इसके सदस्य बन सकते हैं।

पैकिंग और पोस्टिंग का खर्च भी नहीं लिया जाता है। यह आपको करीब आधे खर्च में घर बैठे प्राप्त होगी।

सम्पर्क करें :

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल-सूरजकुण्ड मार्ग, फरीदाबाद - 121003

दूरभाष 8383821967 नारंग जी
7838169040 प्यारेलाल जी

E-mail shrisidhdataashram.org@gmail.com
website www.sidhdataashram.org
www.sda.org

कभी भी अपनी तृष्णा और स्वार्थ को छोड़ नहीं पाता है। माया के आवरण से अंधकार की ओर बढ़ता ही रहता है, उस मार्ग पर कहीं भी ज्योति नहीं रहती, ज्ञान का प्रकाश नहीं रहता, केवल अज्ञान के वातावरण में भटकता हुआ जीव माया के मोह बंधा रहता है। जब तक माया से सम्बन्ध बना रहता है, तब तक माया उसे नचाती ही रहती है। भगवदभक्ति की और श्रद्धा ही उत्पन्न नहीं होने देती, और न भक्ति भाव का उदय ही होने देती हैं। जब तक भाव का उदय नहीं होता, तब तक माया जीव को नचाती रहती है।

मेरे प्रेमियो, कलियुग को आप चाहे अनाचार, अत्याचार और अनैतिक युग कहते हों किन्तु मैं कलियुग को बहुत अच्छा युग मानता हूं। इस युग में बहुत अच्छाई है, इस युग में लेशमात्र भी बुराई नहीं है। अच्छाई और बुराई हमारी दृष्टि पर निर्भर है–

यथा दृष्टि: तथा सृष्टि:

अरे, बुराई में हम गिरेंगे बुराई होगी, और बुरा युग कहलाएगा। लेकिन हम पतन की पगडंडी पर ही क्यों जायें। एक ओर कीचड़ है और दूसरे निर्मल जल है। यदि हम कीचड़ में गिरेंगे, बुराई है। यदि हम अशुभ और अकर्म कर्म की ओर प्रेरित होंगे, माया–मोहपाश में बंधते ही जायेंगे। यदि हम निर्मल जल की ओर चलेंगे, कीचड़ लगना तो दूर, अपितु निर्मल जल से कीचड़ भी धुल जाएगा। अर्थात् हम भक्ति भाव के भाव लेकर जगत् में धर्मरत् रहेंगे। भक्ति भाव के कारण माया मोहादि सब नष्ट हो जायेंगे और हम पापों से मुक्त हो जायेंगे।

सुन्दर क्या है, प्रभु का नाम। यही शाश्वत है।

इस कलियुग में यही पुण्य, धर्म और सद्कर्म है।

....क्रमश: जारी

मंदिर का शीत काल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 5:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 5:15 से 5:45 बजे आराधना
सायं 5:45 से 6:10 बजे अर्चना
सायं 6:10 से 6:30 बजे राजभोग
रात्रि 6:30 से 8:15 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:15 से 8:30 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 8:30 विश्राम (कपाट बंद)

मंदिर का ग्रीष्मकाल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 6:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 6:15 से 6:45 बजे आराधना
सायं 6:45 से 7:10 बजे अर्चना
सायं 7:10 से 7:30 बजे राजभोग
रात्रि 7:30 से 8:45 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:45 से 9:00 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 9:00 विश्राम (कपाट बंद)

दोपहर 1 से 4 बजे तक आश्रम/मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है।

प्रात: 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

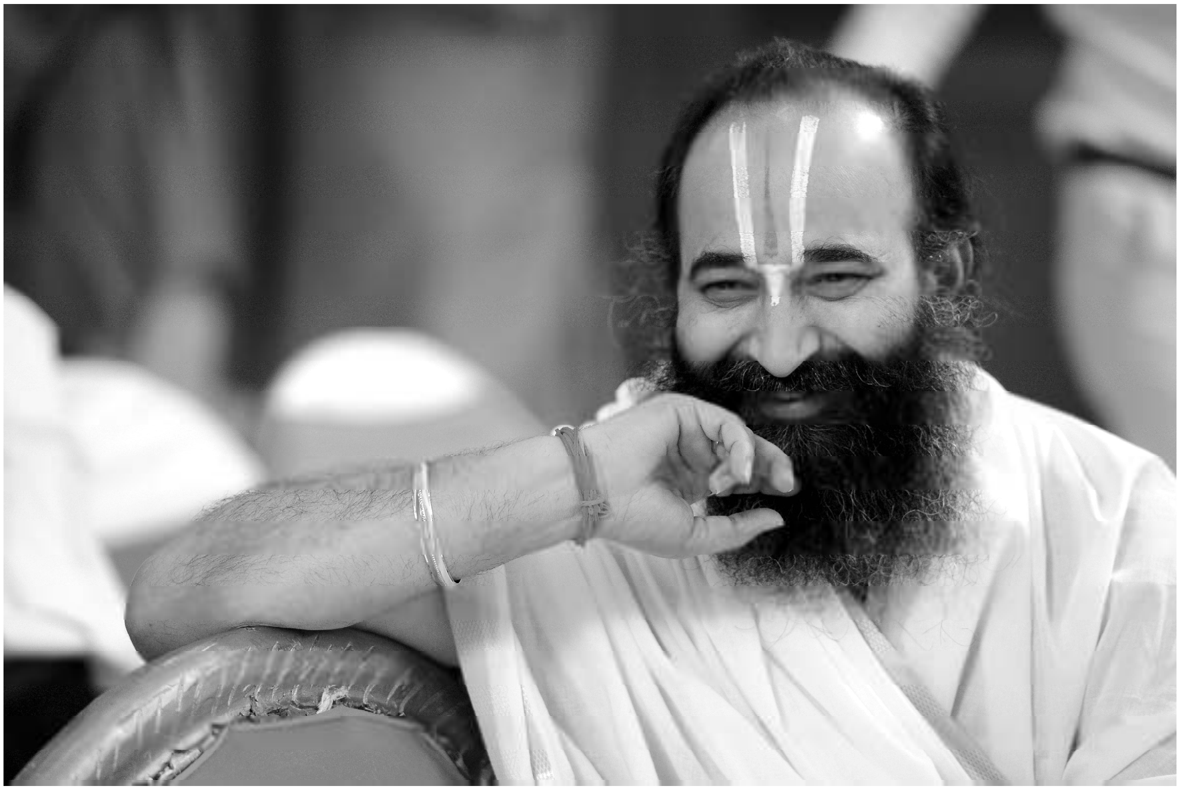

लक्ष्य को सर्वोपरि रखें

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा।।
कबहुंक कर करुना नर देही।
देत ईश बिनु हेतु सनेही।।

यह हमारा मानव का जीवन विषय वासनाओं के लिए नहीं हुआ है। यह भगवान की कृपा का शरीर है। यह मानव का शरीर बहुत प्रकार के यज्ञ, जप, तप, दान करने से प्राप्त नहीं होता। वह परमात्मा इस जीव पर दया करते हैं तब यह मानव का शरीर प्राप्त होता है। इसमें भगवान का तनिक भी स्वार्थ नहीं है। ना कोई अपेक्षा रखता है। भगवान को सिर्फ एक ही चिंतन रहता है कि यह जीव भूमंडल में जाकर अच्छे कार्य करे कि जोत से जोत परवान हो जाए अर्थात मोक्ष हो जाए।

यह जीव ईश्वर का अंश है। भगवान हमारे परम पिता हैं।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखराशि।।
सो माया बस भयऊं गौसाईं।
बंदयो कीर मरकट की नाहीं।।

और इस माया से पार पाना है तो भगवान का नाम लो। वो ही माया से बचा सकते हैं।

आज गुरु पूर्णिमा उत्सव पर सभी को शुभ आशीर्वाद, मंगलाशासन।

आहार निद्रा भय मैथुनन्च सामान्य मेतत
पशुभिर्नराणाम।।
धर्मोहि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीना
पशुभिःसमाना।।

मानव का लक्ष्य है परमात्मा की प्राप्ति परन्तु आज के मानव को अपने जीवन का लक्ष्य ही पता नहीं है। बस चले जा रहे हैं।

किस दिशा में जा रहे हैं, पता ही नहीं।

यहीं आकर सदगुरु की आवश्यकता पड़ती है। वह सदगुरु ही हैं जो हमें ज्ञान देता है। उस परमात्मा के निज धाम पहुंचाने का कार्य गुरु ही करता है।

इसलिए गुरु को सर्वोपरि माना गया है।

गुरु गोबिंद दोउ खड़े काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपणो जिन गोबिंद दिया मिलाय।

गुरु की कृपा मिल जाए, हमारा जीवन धन्य हो जाए। वेदों में पुराणों में गुरु की महिमा का गुणगान मिलता है। सदगुरु को परमात्मा से भी श्रेष्ठ माना गया है।

भगवान ने संसार की रचना ही ऐसी की है। सभी का मन संसार में फंसा हुआ है। पर यह संसार बहुत भयावह है।

संत कहते हैं-

मानव का लक्ष्य है परमात्मा की प्राप्ति परन्तु आज के मानव को अपने जीवन का लक्ष्य ही पता नहीं है। बस चले जा रहे हैं। किस दिशा में जा रहे हैं, पता ही नहीं।

छुऐ कछु तो हाथ न आवै।
और छुऐ बिना रहा न जावै।।

यह संसार और शरीर दोनों ही नाशवान हैं। और इस जीवात्मा एवं आत्मा का संबंध नित्य है।

इस संसार का सुख स्वप्न की तरह धोखा है जैसे एक सुग्गा (तोता) सेमर के वृक्ष के फूलों को देखकर उसकी बहुत दिनों तक सेवा करता है। सेमर का फल केले की तरह दिखता है। फल के पकने तक सुग्गा वहीं पर इस आशा में बैठता है कि फल पकेगा और मुझे खाने को मिलेगा।

बसंत में फल पका, तोते ने चोंच मारी तो वह फल फट गया। उसको अंदर खाने की कोई चीज तो नहीं मिली बल्कि सूखी रुई निकली जो हवा में उड़ गई। उस तोते के हाथ कुछ नहीं लगा।

और तोते ने विचार किया कि अब इसके पास नहीं जाऊंगा। परन्तु देखिए मोह की माया कि सदा बसंत में तोता मोहित होकर सेमर के पास जाता है और धोखा खाता रहता है।

हम भी उसी तरह से संसार में रिश्तों से धोखा खाते रहते हैं पर फिर भी उससे बाहर नहीं निकल पाते हैं।

गोस्वामी जी ने लिखा है

मोह सकल ब्याधिन कर मूला,
ताते उपजे बहु बिधि सूला।

प्रभु की माया बड़ी विचित्र है। यह सारा जगत उससे मोहित है। इससे बिरला ही बचता है।

यहीं आकर सदगुरु का अवतरण होता है।

विचार कीजिए जो जीव को संसार में फंसाए रखता है। वह परमात्मा श्रेष्ठ है या जो जीव को संसार से हटाकर प्रभु के चरणों में लगा दे, वह सदगुरु श्रेष्ठ है।

स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के प्रति निस्वार्थ भक्ति दर्शाई

स्वामी विवेकानंद जी ने देवी जगदंबा माता के पास केवल ज्ञान भक्ति एवं वैराग्य की मांग की थी। इसके बारे में विवेकानंद बताते हैं कि संसार में रहने वाले सैकड़ों विचार उनके मन में भरे रहते थे। वह धन कमाने के लिए घर से निकलते थे लेकिन कुछ खास नहीं कमा पाते थे।

आखिरकार उन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से विनती करने का निर्णय किया कि वह देवी जगदंबा से उनके परिवार का पोषण करने के लिए कहें।

उन्होंने गुरुजी से कहा, कि मेरे लिए माता से बात करें।

लेकिन गुरुजी बोले, पुत्र यह बात मैं नहीं बता सकता, तू खुद ही माता को बता, अपने बारे में।

मैंने कई बार माता से तेरे बारे में कहा है, लेकिन तू उसे मानता ही नहीं है। इसलिए वो तेरी बात सुनती नहीं है।

कोई बात नहीं आज रात को मंदिर में आ जाना, तू जो मांगेगा, मां तुझे जरूर देगी।

विवेकानंद को पूरा विश्वास था कि गुरुजी ने कह दिया है, तो पूरा अवश्य होगा। और वह आतुरता से रात का इंतजार करने लगे।

मंदिर पहुंचने पर विवेकानंद को माता के दिव्य दर्शन हुए। विवेकानंद माता को देखते हुए बोलने लगे, माता, मुझे विवेक, वैरागय, ज्ञान एवं भक्ति प्रदान करें, साथ ही मुझे ऐसा आशीर्वाद दें कि मुझे निर्विघ्न रूप से आपके दर्शन होते रहें। स्वामी विवेकानंद के हृदय में शांति भर गई। उनके लिए सारी दुनिया जैसे अदृश्य हो गई।

तभी गुरु जी आए और पूछा, क्यों नरेंद्र माता से बात हो गई। मांग ली अपनी इच्छाएं। विवेकानंद का पहले नाम नरेंद्र था।

विवेकानंद बोले, नहीं मैं मां से कुछ मांग ही नहीं पाया।

गुरुजी बोले, जाओ, एक बार फिर मां से जाकर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने का वरदान मांगो।

विवेकानंद फिर गए और मां से फिर विवेक, वैरागय, ज्ञान एवं भक्ति मांग कर वापिस आए गए।

गुरुजी ने हंसते हुए पूछा, नरेंद्र मांग ली इच्छापूर्ति का वरदान।

नहीं, मैं तो माता को देखते ही सबकुछ भूल गया।

गुरुजी ने फिर कहा, अरे तू सही तरीके से मांगता नहीं है। मां देने के लिए मंदिर में ही बैठी है।

विवेकानंद फिर मंदिर में गए। लेकिन इस बार मंदिर में पहुंचते ही उन्हें शर्मिंदगी लगी, कि मैं इतनी सी बात बताने के लिए मां के पास आया हूं।

हृदय शर्म से भर गया। सोचने लगे, जब राजा प्रसन्न हो तो उससे कद्दू नहीं मांगना चाहिए।

बोले, मां मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे केवल ज्ञानभक्ति ही प्रदान करें।

बाहर आकर गुरुजी से बोले, आपने ही कोई लीला की है। मैं मां से कुछ मांग ही नहीं सका। आप ही मेरे लिए मां से प्रार्थना करो कि मेरी माता और भाई को अन्न वस्त्र आदि की कमी न रहे।

गुरुजी बोले, तू मां से मांग नहीं सका। वास्तव में

तेरे भागय में सांसारिक सुख नहीं है।

लेकिन विवेकानंद के बार बार कहने पर गुरुजी बोले, तेरे परिवार को कोई कमी नहीं रहेगी।

यह है गुरुओं की कृपा। जो शिष्य को बहकने नहीं देते।

जगत में तीन देव बड़े माने गए हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

यह तीनों एक एक कार्य करते हैं। परन्तु सदगुरु तीनों कार्य एक साथ करते हैं।

1 ब्रहमा– ब्रह्मा जी जगत की उत्पत्ति करते हैं। और सदगुरु दीक्षा देकर शिष्य को नया जन्म देते हैं।

2 विष्णु – गुरु विष्णु के स्वरूप भी है। गुरु भी सर्वकाल तक शिष्य की रक्षा करते हैं। माता पिता बच्चों का पोषण करते हैं पर उसमें भी उनका स्वार्थ होता है। और गुरु का प्रेम शुद्ध होता है। और निस्वार्थ होता है।

गुरु हमेशा शिष्य पर कृपा करते हैं।

शिष्यन को यह चाहिए, गुरु को सर्वस्व दे।

गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्यन से नहीं ले।।

लोभी गुरु लालची चेला, होय नर्क में ठेलम ठेला।

3 महेश्वर– भगवान शंकर प्रलय करते हैं। तब सब नष्ट हो जाता है। परन्तु बलिहारी हे सदगुरु जो जगत के होने पर भी जगत का प्रलय कर देते हैं। जगत दिखता ही नहीं केवल परमात्मा ही नजर आते हैं।

गुरु के प्रत्येक व्यवहार से ज्ञान मिलता है। किसी गुरु की, संत की सेवा करोगे तो गुरु मार्ग बताएंगे।

संसार में अकेले मत भटको वर्ना इस भवसागर में भटकते रह जाओगे। गुरु के बिना गति नहीं।

गुरु बृहस्पति और इंद्र देवता का दृष्टांत

एक बार इंद्र अपनी सभा में बैठे थे। वहां उनकी अपनी महफिल चल रही थी। उसी समय देव गुरु बृहस्पति वहां पहुंचे। सभी लोग उन्हें देखकर खड़े हो गए, लेकिन इंद्र उन्हें देखकर खड़े नहीं हुए।

लेकिन गुरुजी बोले, पुत्र यह बात मैं नहीं बता सकता, तू खुद ही माता को बता, अपने बारे में। मैंने कई बार माता से तेरे बारे में कहा है, लेकिन तू उसे मानता ही नहीं है।

बृहस्पति इंद्र के अहंकार को जानकर सभा से ध्यान के लिए अंतरध्यान हो गए। बाद में इंद्र को अपनी गलती का अहसास हुआ। काफी पता करने पर भी बृहस्पति का कुछ पता नहीं चला।

कुछ दिन बाद इंद्र ने सोचा, मैं बलवान हूं, समृद्ध हूं, दूसरा गुरु बना लेता हूं।

इंद्र ने विश्वरूप जी को अपना गुरु बनाने का यत्न किया। इंद्र ने विश्वरूप जी से ऐसा यज्ञ करने के लिए कहा कि जिससे देवताओं को मायावी शक्तियों की प्राप्ति हो।

विश्वरूप जी दैत्यों और देवताओं में समभाव रखते थे।

उन्होंने यज्ञ करते हुए पहले देवताओं के लिए आहूतियां दीं और इसके बाद दैत्यों के लिए आहूतियां देने लगे। जो इंद्र पर बर्दाश्त नहीं हुआ। इंद्र ने विश्वरूप का वध कर दिया।

इंद्र द्वारा विश्वरूप जी के वध के बाद इंद्र का गुरु बनने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। गुरु द्रोह करने वाला किसी के भी साथ द्रोह कर सकता है।

दूसरी ओर दैत्यों ने शुक्राचार्य को अपना गुरु बना लिया। दैत्य मजबूत होने लगे और देवता कमजोर होने

लगे। नतीजा गुरु का अपमान करने वाला इंद्र दैत्यों से हार गया।

तब देवताओं ने ब्रह्माजी से प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने बृहस्पति जी को पुन: देवताओं का गुरु बनने के लिए राजी किया। जिसके बाद स्वर्ग की रक्षा हो सकी।

गुरु की कृपा के बिना जीवन में जीत मुमकिन नहीं है।

शबरी की सेवा भक्ति

गुरु के वचनों का गुरु से अधिक महत्व होता है। एक व्यक्ति गुरु को माने और गुरु की बात नहीं माने तो वह शिष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

रामचरित मानस में भगवान राम अपने श्रीमुख से कहते हैं-

सोई सेवक प्रियतम मम होई।
मम अनुशासन मानै जोई।।

जिसे अपने गुरु पर विश्वास नहीं, वह शिष्य हो ही नहीं सकता। उसे कभी सपने में भी शांति नहीं मिल सकती।

रामचरित मानस में आया है-

गुरु के बचन प्रतीत न जेहि।
सपनेहुं सुगम न सुख सिधि तेहि।।

प्राय ऐसा देखा गया है हम गुरु को मानते हैं पर उनके वचनों को नहीं मानते। बाल्मीकि जी को नारद, जैसे गुरु मिले। उन्होंने आज्ञा दी जब तक मैं वापिस नहीं आऊं तब तक यहीं बैठ कर राम नाम मंत्र का जाप करते रहना। और उन्होंने वही किया। यह भी नहीं पूछा कि आप वापिस कब आओगे।

इतना विश्वास अपने गुरु के वचनों पर होना चाहिए। जैसे शबरी को था। शबरी को उनके गुरु पर विश्वास था। वह बोलकर गए थे कि शबरी तुम यहीं रहकर सेवा करना। एक दिन राम अवश्य आएंगे।

शबरी ने वृद्धावस्था तक इंतजार किया पर उन्हें अपने गुरु पर भरोसा था, विश्वास था और उसी सेवा और विश्वास के बल पर भगवान शबरी की कुटिया पर आ गए।

गुरुजी की आवाज सुनाई दी
शबरी देख राम इहैं आऐ।
मुनि के वचन समझ जिय आऐ।।

शबरी ने पूरा जीवन भगवान राम के इंतजार में गुजार दिया।

रोज फूल तोड़कर लाती, फल लाती कि भगवान मेरी कुटिया पर आएंगे।

सेवा

सेवा वही कर सकता है जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता। दूसरे को सुख पहुंचाकर सुखी होगा। सेवा के बदले लेशमात्र भी मान बड़ाई चाहना और मान बड़ाई मिलने पर राजी होना। यह भोग है, सेवा नहीं।

सेवा करने में थोड़ा सुख लिया गया तो वह सुख धन आदि पदार्थों में महत्व बुद्धि पैदा कर देता है जिससे ममता और कामना की उत्पत्ति होती है।

सेवा भाव है, कर्म नहीं। कर्म से बंधन और सेवा से मुक्ति मिलती है। सेवा का भाव होने से हमारे पास जो भी वस्तुएं हैं वह स्वत: सेवा में लग जाएंगी।

अगर देखें तो सेवा भाव से होती है। वस्तुओं से नहीं। वस्तुओं से कर्म होते हैं, सेवा नहीं। वस्तुएं तो दुकानदार भी देता है। पर साथ में उसका लेने का भाव भी होता है। उसमें पुण्य नहीं होता।

जैसे प्रजा राजा को कर के रूप में धन देती है। हम सरकार को टैक्स देते हैं। वह दान नहीं है।

किसी को जल पिलाने पर मैंने उसे जल पिलाया, ऐसा भाव रखना दुकानदारी है।

जल पिलाने से पुण्य होगा, दान करने से पुण्य होगा। ऐसा भाव रखने पर भी हमारा फल के साथ संबंध हो जाता है। फिर वह वास्तविक निस्वार्थ सेवा नहीं हुई।

सेवा में एक बात विशेष ध्यान देने की है।

सच्चे हृदय से दूसरों की सेवा करने से जिसकी वह सेवा करता है। उसके हृदय में भी सेवा का भाव जागृत हो जाता है।

यह नियम है-

जैसे गुरु महाराज कहा करते थे

भाव में ही भाव है मेरा

और लोग मुझे अच्छा कहें, प्रशंसा करें, ऐसा भाव सेवा में नहीं होना चाहिए।

क्योंकि उससे अभिमान, अहंकार बढ़ता है। यह संसार केवल कर्तव्य पालन के लिए है। सुखी दुखी होने के लिए नहीं। संसार सेवा के लिए है, संसार में हमें सेवा ही सेवा करनी है। सेवा करते समय साधक का यह भाव होना चाहिए। मेरे द्वारा किसी का नुकसान न हो।

फिर देखिए, सारी समस्याएं ही खत्म हो जाएंगी। जो महाभारत होता है। वह खत्म हो जाएगा। गृहस्थ स्वर्ग बन जाएगा। दुखी प्राणी को देखकर दुखी होना और सुखी प्राणी को देखकर सुखी होना भी सेवा है। ऐसे लोग संत कहलाते हैं।

तुलसीदास जी ने संतों के लक्षणों में कहा है- पर दुख दुख, सुख सुख देखे पर।

सेवा करने का अर्थ है, सुख पहुंचाना।

परमार्थ के मार्ग में राग द्वेष ही साधकों की संपत्ति लूटने वाले मुख्य शत्रु हैं।

ममैवांशो जीवलोके।

जीव का परमात्मा पर पूरा हक है। जैसे मां पर बालक का। सब बालक अपनी मां की गोदी में जा सकते हैं। ऐसे ही परमात्मा सबके हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

इसके लिए हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए। क्योंकि यह मानव का शरीर हमें मिला ही इसलिए है।

भगवान ने मनुष्य को स्वतंत्रता प्रदान की है। चाहे तो अपना कल्याण कर ले। और चाहे तो चौरासी लाख योनियों में जाकर नर्क में चले जाएं।

रामायण में आया है-

एक बानि करुना निधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की।।

भगवान का एक स्वभाव है। एक बान है कि जिसका एक भगवान के सिवाय दूसरा कोई सहारा नहीं, वह भगवान को बहुत प्यारा लगता है। एक तलवार में दो म्यान नहीं लगा सकते। ऐसे ही प्यार में एक ही होता है।

इसलिए भगवान ने पूरी गीता सुनाकर अर्जुन से कहा

मामेकं शरणं व्रज

जितने भी सांसारिक रिश्ते हैं वो आपसे न्याय युक्त आशा रखते हैं।

उनकी सेवा कर दो लेकिन उनसे सेवा करवाने की आशा नहीं रखो।

यह संसार में रहने का बढिया तरीका है।

दोनों हाथ में लड्डू। संसार भी राजी हो जाएगा और परमात्मा भी।

हरद लगे न फिटकरी फिर भी रंग चोखो।

लेने की इच्छा से मनुष्य का संसार से संबंध जुड़ता है और देने की इच्छा से टूटता है। यह बड़ी मार्मिक बात है।

इसलिए सेवा करने के लिए संबंध जोड़ो। सेवा लेने के लिए नहीं। दूसरों की सेवा करोगे तो वैराग्य उतपन्न होगा।

धर्म ते बिरति जोग तें ज्ञाना

सेवा में स्वाथ नहीं होता।

अपने स्वार्थ के लिए काम करने से ही काम बिगड़ता है।

भक्त व शिष्य का दास भाव होना चाहिए।

और हमारी परम्परा तो यही है।

जैसे हनुमान जी का अपने इष्ट श्रीराम के प्रति था।

अपने आपको अपने स्वामी के प्रति समर्पित कर देना और उनकी इच्छा, उनके मनोभाव, प्रेरणा अथवा आज्ञा के अनुसार उनकी सेवा करना। उनको निरन्तर सुख पहुंचाना का भाव रखना। तथा बदले में कुछ नहीं चाहना, यही भक्ति का स्वरूप है। यह सब चीजें हनुमान जी में पाई जाती हैं। उनका पूरा जीवन तो भगवान को सुख पहुंचाने के भाव से ओत प्रोत है।

भगवान को श्रद्धा पूर्वक सुख पहुंचाने के भाव को रति कहते हैं।

यह रति चार प्रकार की मानी गई है।

दास्य-सख्य-वात्सल्य-माधुर्य

हनुमानजी में दास्य रति की पूर्णता है।

दास्य रति

दास्य रति में भक्त का भाव रहता है कि भगवान मेरे स्वामी हैं और मैं उनका दास हूं। सेवक हूं। वो चाहे जो करे हमें किसी भी हाल में रखें। मेरे से जैसे चाहे वैसा काम लें। मेरे पर उनका पूर्ण अधिकार है। इस रति में भक्त का शरीर, इंद्रियां मन बुद्धि में अपनापन नहीं रहता। मैं सेवक हूं ऐसा अभिमान भी नहीं रहता।

बल्कि वो सोचता है भगवान की दी गई शक्ति, उनके द्वारा दी गई सामग्री उन्हीं को अर्पण कर रहा हूं।

ऐसे अनन्य भाव वाले भक्तों को भगवान यदि मुक्ति प्रदान करे तो वो इनको ग्रहण नहीं करते।

स्वामी ने सेवा स्वीकार कर ली, इस बात से भक्त अपने आपको धन्य मानता है। हनुमान जी भगवान राम की सेवा में इतने दक्ष हैं कि भगवान मन में संकल्प उठाने से पहले ही वे उसकी पूर्ति कर देते हैं।

सख्य रति

सख्य रति में भक्त का भाव रहता है कि भगवान मेरे सखा हैं। और मैं उनका सखा हूं। वे मेरे प्यारे हैं और मैं उनका प्यारा हूं। मेरे उन पर पूर्ण अधिकार है और उनका मेरे पर पूर्ण अधिकार है। सखा भाव होने से भगवान राम कभी कभी हनुमान जी से सलाह भी लिया करते थे।

वात्सल्य रति

इसमें भक्त का भाव यह रहता है कि मैं भगवान की माता हूं। या उनका पिता हूं। उनका गुरु हूं। और मेरे पुत्र हैं। उनका पालन पोषण करना है।

जैसे हनुमान जी कई जगह भगवान राम को अपनी गोद और पीठ पर बैठाया।

माधुर्य रति

इसमें भक्त का भगवान के प्रति घनिष्ठ अपनापन रहता है। माधुर्य भाव स्त्री पुरुष के संबंध में रहता है।

माधुर्य नाम मधुर मिठास का है।

राम काज करबे को आतुर

राम काज किन्हें बिना मोहे कहां विश्राम

एक बार हनुमान जी को भूख लगी तो वे माता सीता के पास गए और बोले मां मुझे भूख लगी है। खाने को कुछ दो। सीता मां बोली, मैंने अभी स्नान नहीं किया, तुम ठहरारे। मैं अभी स्नान करके भोजन देती हूं। सीता जी ने स्नान करके श्रृंगार किया। उनकी मांग में सिंदूर देखकर सहज सरल हनुमान जी नेपूछा कि मां आपने यह सिंदूर क्यों लगाया है। सीता जी ने कहा कि बेटा इसको लगाने से तुम्हारे स्वामी की आयु बढ़ती है।

ऐसा सुनकर हनुमान जी को विचार आया कि अगर सिंदूर की एक रेखा खिंचने से राम की आयु बढ़ती है तो फिर पूरे शरीर में सिंदूर लगाने से उनकी आयु कितनी बढ़ जाएगी।

सीता जी रसोई में गई तो हनुमान जी श्रृंगार कक्ष में चले गए और अपने पूरे शरीर में सिंदूर लगा लिया। और सोचने लगे अब मेरे प्रभु की आयु खूब बढ़ जाएगी।

ऐसा सोचकर हनुमान जी बहुत हर्षित हुए। और भूख प्यास भूलकर राजदरबार में पहुंच गए। हनुमान जी

को देखकर सभी हंसने लगे।

रामजी ने पूछा, हनुमान आज तुमने अपने पूरे शरीर पर यह सिंदूर का लेप कैसे कर लिया। हनुमान जी बोले, प्रभु मां के थोड़ा सा सिंदूर लगाने से आपकी आयु बढ़ती है तो ऐसा जानकर मैंने अपने ऊपर पूरे शरीर में सिंदूर लगा लिया।

राम जी हंसने लगे और बोले, हनुमान आगे जो भी भक्त तुम्हारे को तैल और सिंदूर चढाएगा, उस पर मैं प्रसन्न होउंगा।

इसलिए कहा गया है

मोरे मन प्रभु अस विश्वास

राम ते अधिक राम कर दासा

भगवान शंकर कहते हैं-

हनुमान सम नहीं बडभागी, नहि कोउ राम चरन अनुरागी

गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई, बार बार प्रभु जिन मुख गाई ।।

संत और गुरु की महिमा अपार है।

संत ही भगवान हैं भगवान ही संत हैं। संतों का भगवान के अतिरिक्त पृथक कोई अस्तित्व है ही नहीं।

किसी ने कहा भी है-

ढूंढा सब जहां में पाया पता तेरा नहीं

जब पता तेरा लगा तो अब पता मेरा नहीं

देखिए विचित्र बात है।

संत भगवान को सर्वोपरि मानते हैं। और संत भगवान से बड़े हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं-

मोरे मन प्रभु अस विश्वास

राम ते अधिक राम कर दासा

संत इसलिए भी बड़े हैं, सत्संग संतों के द्वारा सुनाया जाता है।

भगति स्वतंत्र सकल गुन खानी

बिनु सत्संग न पावहिं प्रानी

देखिए भगवान तो दुष्टों का उद्धार करते हैं, उनका संहार करके। पर संत दुष्टों का उद्धार करते हैं, उनकी वृत्तियों को सुधार कर।

भगवान तो अपने कानून में बंधे हुए हैं परंतु संतों को दया आ जाती है। भगवान सब जगह मिल सकते हैं पर संत कहीं कहीं। हमारा उद्धार करने में संत ही बड़े हुउ। वैसे देखा जाए तो संत और भगवान एक ही हैं।

भक्ति भक्त और भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक।

इनके पद बंदन किए नासत विघ्न अनेक।।

संतों के गुरुजनों के मन उनकी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए। उनके उपदेशों का आदर पूर्वक पालन करना यही संत सेवन की ऊंची से ऊंची विधि है। संतों से पुत्र, स्त्री, धन, मान, बड़ाई सांसारिक पदार्थ मांगना हीरे से पत्थर फोड़ने जैसा है।

आज्ञा पालन का स्थान सेवा में सबसे ऊंचा माना गया है। शरीर की पूजा से अधिक उनके वचन महत्व रखते हैं। संतों के वचनों को अधिक महत्व देना चाहिए।

एक संत थे। उनके पास रहने वाले भक्त उनसे शिक्षा प्राप्त करते थे। एक दिन संत ने एक व्यक्ति की परीक्षा लेनी चाही। बोले, मेरी कमर में दर्द हो रहा है, जरा अपने पैर से इसे दबा दो। शिष्य ने कहा, महाराज आपके शरीर पर कैसे पैर रखूं। संत ने तुरंत उत्तर दिया, ठीक है। मेरे शरीर पर तुम पैर नहीं रख सकते, लेकिन तुमने मेरी जुबान पर तो पैर रख ही दिया।

मेरे प्रेमियो, यह एक दृष्टांत है।

देखिए, सेवा तीन तरह से कर सकते हैं।

तन-मन और धन।

मानसी सेवा का भी महत्व है।

मानसी सेवा भी श्रेष्ठ है। इसमें एक पैसा का भी खर्च नहीं और ना शरीर को कोई कष्ट।

एक कंजूस बनिया गुसाईं जी के पास गया और उनसे कहा, एक पैसा खर्च नहीं हो, ऐसी सेवा बताइये।

गुसाईं जी ने कहा, मन से सेवा करो।

अपने इष्ट देव की सेवा करो। बाल गोपाल की सेवा करो। सुबह चार बजे उठ जाना और भावना करना मन में सोच लेना, मैं गंगाजी, यमुना जी में स्नान कर रहा हूं। मन से प्रणाम करके गंगा जल में स्नान करना फिर ठाकुर जी के लिए पवित्र गंगाजल लेकर आना फिर भावना करना कि ठाकुर जी सो रहे हैं। कन्हैया बहुत सुन्दर दीख रहे हैं। मैं अपने लाला को जगा रहा हूं। ताली बजाकर कीर्तन करना, तब ठाकुर जी जागेंगे फिर सोने के सिंहासन में मखमल की सुंदर गद्दी पर उन्हें स्थापित करना। मन में ही सेवा करनी है इसमें कंजूस क्यों बना जाए।

फिर मन में ही ठाकुर जी को गाय का दूध अर्पण करना। मन में ही भगवान को चांदी की कटोरी में मक्खन मिश्री अर्पण करना।

मानसी सेवा करने वालों के मन में भाव जागृत हो जाते हैं। फिर भगवान को स्नान करवाना फिर चरण पखारना बाद में पीताम्बर पहनाना, सुंदर श्रृंगार करना, चरणों में तुलसी अर्पण करना, भोग लगाना, आरती करना।

हम जितनी देर सेवा करते हैं उस समय तक आंखें और मन भगवान में लीन रहें। तब मानसी सेवा होती है।

बनिया हर रोज चार बजे उठकर आज्ञा अनुसार मानसी सेवा करने लगा। बनिया ने 12 वर्ष तक मानसी सेवा की।

प्रत्यक्ष ठाकुर जी भोजन ग्रहण कर रहे हैं। ऐसे दर्शन होने लगे तो बहुत आनन्द आता है।

एक बार ठाकुर जी की सेवा करते हुए मन में बनिया दूध ले आया। दूध गर्म किया और शक्कर डाली। वह अधिक पड़ गई। बनिये की प्रकृति कंजूसी की थी। मन में विचार आया दूध में पड़ी शक्कर निकाल लूं तो । दूसरे दिन उपयोग में आ जाएगी।

देखिए सब मन में ही हो रहा है। वहां दूध नहीं, शक्कर नहीं, कुछ नहीं ठाकुर जी को मजाक सूझा।

भगवान ने सोचा भई इस तरह का आदमी जैसा रत्न मैंने नहीं देखा। मानसी सेवा और उसमें भी कंजूसी। फिर भी सोच रहा है अधिक शक्कर पड़ी है।

वो भी निकालने जा रहा है। भगवान प्रकट हुए और बनिए का हाथ पकड़ लिया और बोले–

अरे अधिक शक्कर पड़ गई तो इसमें तेरे बाप का क्या जा रहा है। तुम तो मानसी सेवा कर रहे हो।

श्रीकृष्ण का स्पर्श हुआ। वह सच्चा वैष्णव बन गया। भगवदभक्त हो गया। ये सेवा की महिमा है।

प.पू. श्री गुरू महाराज जी के दर्शन लाभ कैसे लें...

प्रतिदिन दोपहर 12 बजे
सतसंग भवन में
मंगलवार, शनिवार एवं रविवार
सायं 7.30 बजे मंदिर में
प्रत्येक गुरूवार
सायं 7.30 बजे समाधि स्थलपर

पंचांग

कलियुग वर्ष ५१२४, विक्रम संवत २०७९, श्री शालिवाहन संवत १९४४, राक्षस नामक संवत्सर, दक्षिणायन, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु (समय घंटे/मिनट में हैं तथा सूर्यास्त के अतिरिक्त दो. १२ उपरांत के समय १३, १४... इस प्रकार हैं।)

जुलाई	आषाढ-श्रावण	तक	नक्षत्र	तक	योग	तक	करण	तक	चंद्र राशि प्रवेश	सूर्योदय	सूर्यास्त
१ शुक्र	शु.प. २	१३.१०	पुष्य	२७.५६	व्याघात	१०.४६	तैतिल	२६.१६	कर्क	५.१२	६.५१
२ शनि	शु.प. ३	१५.१८	श्लेषा	अहोरात्र	हर्षण	११.३२	वणिज	२८.१५	कर्क	५.१३	६.५१
३ रवि	शु.प. ४	१७.०७	श्लेषा	०६.३०	वज्र	१२.०५	बव	अहोरात्र	सिंह ०६.३० उ.	५.१३	६.५१
४ सोम	शु.प. ५	१८.३३	मघा	०८.४४	सिद्धि	१२.२१	बव	०५.५४	सिंह	५.१४	६.५१
५ मंगल	शु.प. ६	१९.२९	पूर्वा	१०.३०	व्यतिपात	१२.१५	कौलव	०७.०५	कन्या १६.५२ उ.	५.१४	६.५१
६ बुध	शु.प. ७	१९.४९	उत्तरा	११.४४	वरीयान	११.४२	गरज	०७.४४	कन्या	५.१४	६.५१
७ गुरु	शु.प. ८	१९.२९	हस्त	१२.२०	परिघ	१०.३८	विष्टि	०७.४४	तुला २४.२२ उ.	५.१५	६.५१
८ शुक्र	शु.प. ९	१८.२६	चित्रा	१२.१३	शिव	०९.००	बालव	०७.०३	तुला	५.१५	६.५१
९ शनि	शु.प. १०	१६.४०	स्वाती	११.२५	सिद्ध	०६.४८	तैतिल	०५.३८	वृश्चिक २८.२१ उ.	५.१६	६.५१
					साध्य	२८.०२	वणिज	२७.३२			
१० रवि	शु.प. ११	१४.१४	विशाखा	०९.५५	शुभ	२४.४४	बव	२४.४८	वृश्चिक	५.१६	६.५१
११ सोम	शु.प. १२	११.१४	अनुराधा	०७.५०	शुक्ल	२१.०१	कौलव	२१.३३	धनु २९.१६ उ.	५.१६	६.५१
			ज्येष्ठा	२९.१६							
१२ मंगल	शु.प. १३	०७.४७	मूल	२६.२२	ब्रह्मा	१६.५८	गरज	१७.५६	धनु	५.१७	६.५०
	शु.प. १४	२८.०१									
१३ बुध	पूर्णिमा	२४.०८	पू.षा.	२३.१९	ऐंद्र	१२.४४	विष्टि	१४.०५	मकर २८.३३ उ.	५.१७	६.५०
१४ गुरु	कृ.प. १	२०.१७	उ.षा.	२०.१८	वैधृति	०८.२७	बालव	१०.११	मकर	५.१८	६.५०
					विष्कंभ	२८.१६					
१५ शुक्र	कृ.प. २	१६.४०	श्रवण	१७.३१	प्रीति	२४.२०	तैतिल	०६.२६	कुंभ २८.१७ उ.	५.१८	६.५०
							वणिज	२७.००			
१६ शनि	कृ.प. ३	१३.२८	धनिष्ठा	१५.१०	आयुष्मान	२०.४९	बव	२४.०४	कुंभ	५.१९	६.४९
१७ रवि	कृ.प. ४	१०.५०	शतभिषा	१३.२५	सौभाग्य	१७.४८	कौलव	२१.४७	कुंभ	५.१९	६.४९
१८ सोम	कृ.प. ५	०८.५६	पू.भा.	१२.२४	शोभन	१५.२६	गरज	२०.१७	मीन ०६.३५ उ.	५.२०	६.४९
१९ मंगल	कृ.प. ६	०७.५०	उ.भा.	१२.१२	अतिगंड	१३.४३	विष्टि	१९.३७	मीन	५.२०	६.४८
२० बुध	कृ.प. ७	०७.३७	रेवती	१२.५१	सुकर्मा	१२.४२	बालव	१९.४९	मेष १२.५१ उ.	५.२०	६.४८
२१ गुरु	कृ.प. ८	०८.१३	अश्विनी	१४.१७	धृति	१२.१९	तैतिल	२०.४८	मेष	५.२१	६.४८
२२ शुक्र	कृ.प. ९	०९.३३	भरणी	१६.२५	शूल	१२.३०	वणिज	२२.२७	वृषभ २३.०२ उ.	५.२१	६.४७
२३ शनि	कृ.प. १०	११.२८	कृत्तिका	१९.०३	गंड	१३.०७	बव	२४.३५	वृषभ	५.२२	६.४७
२४ रवि	कृ.प. ११	१३.४६	रोहिणी	२२.००	वृद्धि	१४.००	कौलव	२७.००	वृषभ	५.२२	६.४६
२५ सोम	कृ.प. १२	१६.१६	मृग	२५.०६	ध्रुव	१५.०३	गरज	अहोरात्र	मिथुन ११.३३ उ.	५.२३	६.४६
२६ मंगल	कृ.प. १३	१८.४८	आर्द्रा	२८.०९	व्याघात	१६.०७	गरज	०५.३२	मिथुन	५.२३	६.४६
२७ बुध	कृ.प. १४	२१.१२	पुनर्वसु	अहोरात्र	हर्षण	१७.०६	विष्टि	०८.०१	कर्क २४.२२ उ.	५.२४	६.४५
२८ गुरु	अमावस्या	२३.२५	पुनर्वसु	०७.०५	वज्र	१७.५६	चतुष्पाद	१०.२०	कर्क	५.२४	६.४५
२९ शुक्र	शु.प. १	२५.२२	पुष्य	०९.४७	सिद्धि	१८.३५	किंस्तुघ्न	१२.२६	कर्क	५.२५	६.४४
३० शनि	शु.प. २	२७.०१	श्लेषा	१२.१३	व्यतिपात	१९.००	बालव	१४.१४	सिंह १२.१३ उ.	५.२५	६.४३
३१ रवि	शु.प. ३	२८.१९	मघा	१४.२०	वरीयान	१९.१०	तैतिल	१५.४२	सिंह	५.२६	६.४३

गुरूभक्त आरुणि या उद्दालक

गुरूभक्तों के लिए प्रेरणादायी कहानी

प्राचीन समय की बात है भारत में एक महान ऋषि हुआ करते थे आयोदधौम्य। महर्षि आयोदधौम्य ब्रह्मज्ञानी थे। अपने जिस शिष्य पर प्रसन्न होते थे उस पर अपने स्पर्श मात्र से शक्तिपात कर देते थे और उसे ब्रह्म ज्ञान हो जाता था। उन दिनों महर्षि आयोदधौम्य के तीन प्रधान शिष्य हुआ करते थे, आरुणि, उपमन्यु और वेद। इनमें आरुणि पांचाल देश का रहने वाला था। वह अपने गुरु का परम आज्ञाकारी शिष्य था। गुरु की आज्ञा-पालन के अतिरिक्त उसकी प्राथमिकता में और कुछ नहीं था। एक दिन सुबह, सूर्योदय के समय से ही तूफानी वर्षा हो रही थी। महर्षि आयोदधौम्य चिंतामग्न थे।

समय बीतने के साथ-साथ वर्षा भी रुकने का नाम नहीं ले रही थी। दोपहर बाद, चिंतित महर्षि आयोदधौम्य ने आरुणि को आश्रम के एक खेत की मेड़ बांधने के लिये भेजा। गुरु की आज्ञा से आरुणि खेत पर गया और प्रयत्न करते-करते हार गया तो भी उससे बांध न बंधा। शरद ऋतु की वह वर्षा अपना रौद्र रूप धारण कर रही थी और आरुणि अपने हर प्रयास में विफल होता जा रहा था। अंत में जब उससे नहीं रहा गया तब उसे एक उपाय सूझा। उसने एक साहसिक निर्णय लिया। अपने जीवन की परवाह किये बिना आरुणि उस मेड़ की जगह स्वयं लेट गया। इससे पानी का बहना बंद हो गया। लेकिन कुछ समय बाद ठण्ड की वजह से आरुणि अचेत हो गया। पूरी रात बीत गयी लेकिन आरुणि नहीं लौटा। उधर रात्रि बीतते-बीतते, वर्षा भी कम हो कर अंततः रुक गयी थी। महर्षि आयोदधौम्य अत्यंत चिन्तित थे आरुणि के लिए। पूरी रात्रि उन्होंने टहलते हुए गुजारी। सुबह होने पर उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा कि, 'आरुणि नहीं आया ?' शिष्यों ने कहा, 'आपने ही तो उसे खेत की मेड़ बाँधने के लिये भेजा था।' आचार्य ने शिष्यों से कहा कि 'चलो, हम लोग भी जहां वह गया है, वहीं चलें। वहां जाकर आचार्य पुकारने लगे, 'आरुणि! तुम कहां हो? आओ बेटा!' कुछ समय बाद अपने आचार्य की आवाज पहचान कर आरुणि उठ खड़ा हुआ और उनके पास आकर बोला, 'भगवन्! मैं यह हूँ। खेत से जल बहा जा रहा था। जब उसे मैं किसी प्रकार नहीं रोक सका तो स्वयं ही मेड़ के स्थान पर लेट गया। आज्ञा कीजिये, मैं आपकी क्या सेवा करूं?' महर्षि आयोदधौम्य की आंखों में आंसू आ गए। आचार्य ने कहा, 'बेटा! तुम मेड़ के बाँध को उद्दलन (तोड़-ताड़) करके उठ खड़े हुए हो, इसलिये तुम्हारा नाम 'उद्दालक' होगा।' फिर कृपा दृष्टि से देखते हुए आचार्य ने और भी कहा, 'बेटा! तुमने मेरी आज्ञा का पालन अपने जीवन रक्षा की परवाह किये बिना किया है। इसलिये तुम्हारा और भी कल्याण होगा। सारे वेद और धर्मशास्त्र तुम्हें स्वतः ज्ञात हो जायेंगे।'

जामुन के फायदे जानिए

गर्मी के मौसम में जामुन बहुत आसानी से बाजार में मिल जाते हैं, और ज्यादातर लोग इसे खाना भी पसंद करते हैं। लेकिन जामुन की खासियत जान कर आप इसे नियमित रूप से खाना शुरू कर देंगे। जामुन में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो आपके शरीर के लिए बेहद प्रभावी होते हैं। पेट से लेकर स्कीन तक की हर बीमारी को खत्म करने में जामुन का फल बहुत ही सहायक सिद्ध होता है।

जामुन के बीजों को पीसकर उसमें थोड़ा सा गाय का दूध मिलाएं। इसे अच्छे से मिलाएं। सोने से पहले इस पेस्ट को अपने पिंपल्स पर लगाएं। अगली सुबह इसे धो लें। नियमित रूप से इस उपचार से आपको कुछ ही दिनों में फर्क दिखाई देने लगता है।

जामुन में विटामिन सी और आयरन होता है जो हीमोग्लोबिन को बढ़ाता है। हीमोग्लोबिन की बढ़ती संख्या के साथ, आपका रक्त अंगों में अधिक ऑक्सीजन ले जाएगा और आपको स्वस्थ रखेगा। फल में मौजूद आयरन आपके रक्त को भी शुद्ध करता है।

जामुन आपके हृदय के लिए भी बेहद लाभदायक माना गया है, ऐसा इसमें मौजूद पोटेशियम के कारण होता है। प्रति 100 ग्राम जामुन में लगभग 55 मिलीग्राम पोटेशियम मौजूद है। फल हाई ब्लड प्रेशर, दिल की बीमारियों और स्ट्रोक जैसी बीमारियों को दूर रखने में फायदेमंद है। यह आपकी धमनियों को भी स्वस्थ रखता है और इसके सख्त होने से बचाता है।

जामुन में मौजूद आयरन रक्त को शुद्ध करने वाले एजेंट के रूप में काम करता है। जिससे आपकी स्किन भी दमकने लगती है। यह आपकी त्वचा और आंखों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। फल कई मिनरल्स और विटामिन सी और ए में भी समृद्ध है।

जामुन में एंटीबैक्टीरियल, एंटी-इनफेक्टिव और एंटी-मलेरिया गुण होते हैं। फल में मैलिक एसिड, टैनिन, गैलिक एसिड, ऑक्सालिक एसिड और बेटुलिक एसिड भी होते हैं। जामुन का सेवन करने से आम संक्रमणों को रोकने में काफी मदद मिलती है।

आपको कैसी लगी हमारी प्रस्तुति जरूर बताइएगा। वैसे तो यह घरेलु उपाय हैं फिर भी प्रयोग पूर्व देख समझकर ही प्रयोग करें तो अच्छा होगा।

कैसे कैसे वास्तु दोष

आचार्य ऋषि सिंह

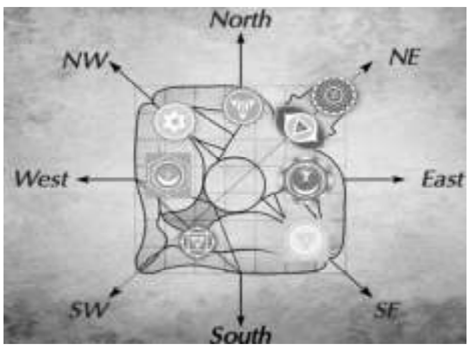

वास्तु ऊर्जा एक अत्यंत सूक्ष्म ऊर्जा है, जिसका हमारे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर आपके आसपास यह ऊर्जा सही मात्रा और दिशा में उपलब्ध हो तो आपके जीवन में इसका सकारात्मक असर होता है। इस ऊर्जा को हम कभी देख नहीं पाते लेकिन इसे अनुभव किया जा सकता है। घर का वास्तु यदि ठीक नहीं है, तो आपको इस तरह के संकेत मिलने लगेंगे।

-आप रोजाना रात को 7-8 घंटे की अच्छी नींद लेते हैं और आपकी दिनचर्या भी ठीक है। इसके बावजूद भी आप खुद को ऊर्जावान महसूस नहीं करते हैं। सुबह उठते ही थकावट और कमजोरी सी महसूस होती है। किसी काम में मन नहीं लगता है। चाय और कॉफी पीने से भी ताजगी का एहसास नहीं होता है, तो हो सकता है कि यह वास्तु दोष के कारण हो रहा है।

-कई बार हम अपने आरामदायक जोन से इतने अभ्यस्त हो चुके होते हैं कि उससे बाहर नहीं निकल पाते है। मौजूदा व्यापार या व्यवसाय में लगातार नुकसान सहने या उसमें भविष्य न दिखने पर भी हम उसे छोड़ने का साहस नहीं जुटा पाते हैं।

-कई लोग अपने काम में कुशल होते हैं और काम नियत समय पर पूरी ईमानदारी और पूर्णता के साथ करते हैं, लेकिन ऑफिस में प्रोमोशन नहीं मिलता है। व्यापार करते हैं तो सब कुछ सही दिशा में होने पर भी तरक्की नहीं होती है। नौकरी या व्यापार में हर बार अच्छे अवसर हाथ से निकल जाते हैं और ऐसे लोग हमेशा पीछे रह जाते हैं। कई बार ऐसा वास्तु दोष के कारण होता है।

-कुछ लोग बिना किसी कारण के निरंतर बीमार रहते हैं। छोटी-मोटी बीमारियां भी उन्हें परेशान करती है। डॉक्टर न कोई बीमारी बताता है न कोई उपचार सुझा पाता है। ऐसी स्थिति में शरीर और मन-मस्तिष्क सभी बुझा-बुझा सा रहने लगता है। उनमें ऊर्जा और जोश का अभाव रहता है।

-वास्तु दोष के कारण कई बार कारोबार या व्यवसाय में बाधाएं आ जाती हैं और कई महीनों तक सफलता हम से दूर रहती है।

(संपर्क सूत्र- 7838738389)

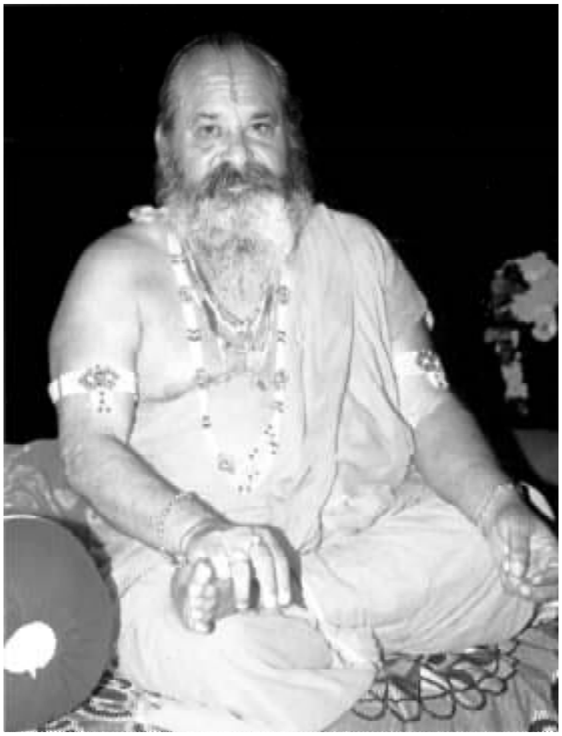

सुखद अनुभवों की लंबी श्रृंखला हैं श्री गुरू महाराज

— अजीत सिंह, कोटला, दिल्ली

गुरुदेव के सान्निध्य में श्री सिद्धदाता आश्रम रूपी वट वृक्ष की शीतल छाया में हुए सुखद अनुभवों की तो एक लम्बी अटूट श्रृंखला है। जब इन अनुभवों के बारे में सोचता हूं तो सर्वप्रथम अपनी कृतघ्नता ही याद आती है। साधारण मानव दिव्य पुरुषों को पहचानने में कैसी–कैसी भयंकर भूल कर बैठता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मैं स्वयं हूं।

नवम्बर 1978 में गुरुजी से पहली बार साक्षात्कार हुआ। उन दिनों आप कोटला के मंदिर में विराजते थे। मुझे नौकरी की समस्या थी। मैं उनसे मिला तो उन्होंने आश्वासन दिया कि जनवरी 1979 में आपको अच्छी नौकरी मिल जायेगी। जनवरी माह में मुझे एक सरकारी नौकरी मिल गई तथा मेरी पोस्टिंग तेजपुर, आसाम में हुई। मैं गुरुजी से मिला और आसाम से अन्यत्र स्थानांतरण की संभावना के बारे में पूछा। उन्होंने आश्वासन दिया और कहा कि शीघ्र ही मेरा स्थानांतरण देहली हो जायेगा। मार्च 1979 में मैं दिल्ली आ गया। इन सब चीजों को एक साधारण ज्योतिषी की गणना मानते हुए मैंने विशेष महत्व नहीं दिया और इस घटना के पश्चात् 3–4 साल तक मंदिर की ओर रुख नहीं किया। अपने काम की व्यस्तता में यह भी भूल गया कि कभी किसी से मैंने सहायता भी ली थी।

1984 तक नौकरी करने के पश्चात् मैंने वहां से त्यागपत्र दे दिया और उसी वर्ष नांगलोई में प्लास्टिक का सामान बनाने का कारखाना लगाया। 1985 में इस काम में मुझे

भयंकर हानि हुई। लगभग सारी जमा पूंजी बर्बाद हो गई तथा मैं सड़क पर आ गया। कई स्थानों पर भटकने के बाद जून–जुलाई 1986 में मुझे पुनः गुरु जी की याद आई। मैं कोटला के उसी मंदिर में पहुंचा तो पहले की अपेक्षा काफी भीड़ होने लगी थी तथा नाम लिखा कर गुरु जी से कुछ पूछा जा सकता था। कई दिन तक मेरा नाम ही नहीं लिखा जा सका। एक दिन किसी प्रकार नाम लिखवाया। जब गुरुजी के सामने पहुंचा तो देखते ही गुरुजी बोले, अजीत सिंह जी! यदि किसी के द्वारा कोई काम हो जाये तो क्या उसको थैंक्यू भी नहीं कहना चाहिए?

इतना सुनते ही मैं पानी–पानी हो गया और मैंने वहीं खड़े–खड़े प्रण किया कि अब प्रतिदिन गुरुजी के चरणों में जल एवं पुष्प हार चढ़ाऊंगा। तत्पश्चात् ही मैं जलपान इत्यादि ग्रहण करूंगा। यह क्रम चलता रहा और एक वर्ष या तेरह महीने पश्चात् एक दिन गुरुजी ने मुझे बुलाया। मेरी पीठ थपथपाकर आशीर्वाद दिया कि शीघ्र ही तुम्हें कोई अच्छी नौकरी मिल जायेगी। इस घटना के 2–3 महीने पश्चात् ही मुझे सूरत में एक अच्छी नौकरी मिल गई।

एक दिन मैंने गुरुजी से निवेदन किया कि सूरत तो बहुत दूर है। मुझे आप अपने चरणों में ही बुला लें और मेरा स्थानांतरण दिल्ली हो गया। गुरुजी की कृपा से यह नौकरी मुझे बहुत फली।

नौकरी छोड़कर अपना व्यवसाय करने की मेरी इच्छा मन से नहीं गई। गुरुजी भी मेरी इस इच्छा को समझ रहे थे। नौकरी से

एक दिन मैंने गुरुजी से निवेदन किया कि सूरत तो बहुत दूर है। मुझे आप अपने चरणों में ही बुला लें और मेरा स्थानांतरण दिल्ली हो गया। गुरुजी की कृपा से यह नौकरी मुझे बहुत फली।

त्यागपत्र देकर एक अच्छे व्यवसायिक क्षेत्र में आ गया। गुरुजी के आशीर्वाद से यह व्यवसाय बहुत फलीभूत हो रहा है।

1986 के बाद से निरन्तर गुरु चरणों की सेवा कर रहा हूं और गुरुजी का असीम प्यार पा रहा हूं। इस बीच मैंने जो भी इच्छा की वह पूरी हुई। भौतिक रूप से तो मैं समृद्ध हुआ ही आध्यात्मिक जगत में भी मेरी इच्छाओं को गुरुजी ने विशेष सम्मान देते हुए पूरा कराया, जैसे मैंने इच्छा की कि फरीदाबाद स्थित गुरु जी की कोठी में सत्संग कराऊं, वह हुआ।

फिर अपने क्षेत्र कोटला में गुरुजी का भव्य सत्संग समारोह आयोजित करने की असंभव सी दिखने वाली अभिलाषा भी पूरी हुई। इसी प्रकार की सैकड़ों बातें हैं, कहां तक वर्णन किया जाये। सौभाग्य से हमें नारायण स्वरूप गुरुदेव की शरण मिली है।

"साक्षात् नारायणस्वरूप स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज" पुस्तक से साभार

चूड़ाकर्म या मुंडन संस्कार

पूर्व जन्म के ऋणों से मुक्ति पाने के लिए किया जाने वाला संस्कार

श्री सुदर्शन संदेश

चूड़ा कर्म संस्कार का हिंदूओं में बहुत ही महत्व है। चूड़ा कर्म संस्कार को मुंडन भी कहा जाता है। हिन्दू धार्मिक मान्यता हैं कि पूर्व जन्मों के ऋणों से मुक्ति के उद्देश्य से जन्मकालीन केश काटे जाते हैं। वहीं वैज्ञानिक दृष्टि के अनुसार जब बच्चा मां के पेट में होता हैं तो उसके सिर के बालों में बहुत से हानिकारक बैक्टीरिया लग जाते हैं जो जन्म के पश्चात धोने से भी नहीं निकल पाते हैं अत: बच्चे के जन्म के एक साल के अंदर एक बार मुंडन अवश्य कराना चाहिए।

हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ (बड़े बच्चे का मुंडन इस माह में न करें, साथ ही इस माह में जन्म लेने वाले बच्चे का मुंडन भी न करें), आषाढ़ (मुंडन आषाढ़ी एकादशी से पहले करें), माघ तथा फाल्गुन मास में बच्चों का मुण्डन संस्कार कराना चाहिए।

मुंडन संस्कार का लाभ भी वेदों में बताया गया है। मुंडन के संदर्भ में यजुर्वेद में उल्लेख हैं कि, मुंडन संस्कार बल, आयु, आरोग्य तथा तेज की वृद्धि के लिए किया जाने वाला अति महत्वपूर्ण संस्कार हैं। मुण्डन के प्रभाव से बच्चों को दांतों के निकलते समय होने वाला दर्द अधिक परेशान नहीं करता हैं। मुण्डन के पश्चात बच्चों के शरीर का तापमान सामान्य हो जाता हैं। इससे मस्तिष्क स्थिर रहता हैं, साथ ही बच्चों को शारीरिक तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं नहीं होती हैं। जन्मकालीन केश उतारे जाने के पश्चात सिर पर धूप पड़ने से विटामिन डी मिलता हैं। इससे कोशिकाओं में रक्त का प्रवाह अच्छी तरह से होता हैं तथा इसके प्रभाव से भविष्य में आने वाले बाल अत्यंत अच्छे होते हैं। मुंडन संस्कार का शुभ मुहूर्त में संपन्न होना शिशु के लिए लाभदायक तथा कल्याणकारी होता हैं, अत: मुंडन संबंधी मुहूर्त के लिए विद्वान ज्योतिषी से परामर्श अवश्य लें या अपनी कुल परंपरा के अनुसार बच्चों का मुण्डन कराएं।

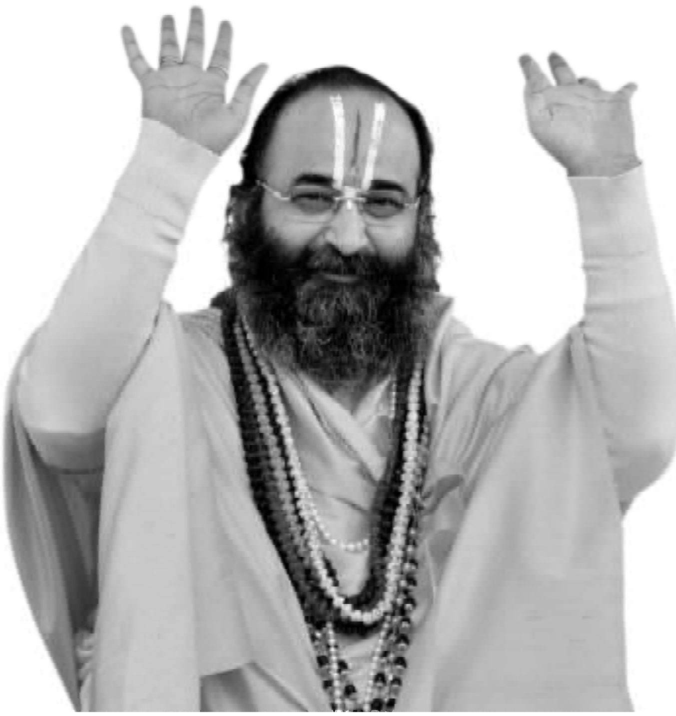

साधक और परमात्मा को मिलाते हैं गुरू

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

आप सभी जानते हैं यह संसार और इसका संबंध नाशवान है। और सभी संत और ग्रंथ भी यही कहते हैं। और यह क्षणिक भी है।

हमारा गर्भ में 9 माह उलटे लटका रहना और वहां का भयानक दुख भोगना यह बड़ी बला है। और परिवार को रोते चिल्लाते उन्हें छोड़कर खुद भी रोते हुए अत्यन्त मेहनत से कमाई हुई सारी संपत्ति छोड़कर इच्छा के बिना मर जाना, यह भी भयंकर बला है।

भला कौन मरना चाहता है। विचार कीजिए हमारा अंतिम समय तक तो मन परिवार की आसक्ति में रहता है, पैसे में रहता है।

सरकार हमें साठ वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त कर देती है और हम फिर भी काम की तलाश में रहते हैं। पहले बोलते थे कि इसके बाद सेवा करेंगे, भजन करेंगे। पर हो नहीं पाता। यह भी बड़ी बला है।

संसार में आया हुआ कोई भी मनुष्य इससे बचा

ही नहीं है। गर्भ का भयानक दुख सब भोगते हैं, मृत्यु का डर भी सबके मन में रहता है।

मृत्यु निश्चित है। यह सत्य है।

हमें विचार करना चाहिए कि इस जन्म से छुटकारा कैसे मिले। इसके लिए कौन सा उपाय करना चाहिए। यह संसारी सुख तो क्षणिक है। यह छूट जाने वाला है। जो आज भाई-बंधु, कुटुम्ब, महल, मकान, नाम, जाति आदि जिसे पाकर हम अपने आपको धन्य मान रहे हैं। यह हमेशा के लिए नहीं है। यह सब छूट जाने वाला है। शरीर के जितने भी संबंधी हैं सदा के लिए अपने नहीं। ना ये गर्भ में अपने साथ थे, ना दुख सुख भोगने में, न मरने में साथ रहेंगे, जिनका हम साथ समझते हैं। यह अपने नहीं हैं। जिस मकान को हम अपना समझते हैं, वह अपना नहीं है। यहां तक कि यह शरीर भी अपना नहीं।

यह सब परमात्मा की कृपा है।

कबहुंक कर करुणा नर देही।

देत ईश बिनु हेतु सनेही।

वह परमात्मा ही हमारा सच्चा पिता है। जब तक हमें उनकी प्राप्ति नहीं होगी, यह जन्म मरण का चक्र चलता ही रहेगा।

जब तक जीव को भगवान नहीं मिलते, तब तक यह जीव सुखी नहीं हो सकता।

इस जीव पर दया करके भगवान ने यह हमें मानव का शरीर दिया है। गुरुओं द्वारा सत्संग के द्वारा नित्य अनित्य वस्तु का ज्ञान भी हमें करा दिया है।

इस संसार का सुख अनित्य है, नाशवान है, यह छूट जाने वाला है, इस बात को हम भली भांति जानते हैं। सौ बात की एक बात है। सच्चे माता पिता, सच्चा भाई बंधु, कुटुम्ब भगवान ही हैं।

और जिस दिन वो मिल जाएं। जीव का बेड़ा पार है।

वो परमात्मा कैसे मिलेंगे। इसके लिए गुरु की शरण में जाना चाहिए। और उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

सभी संतों का मत है- भगवान की प्राप्ति सेवा, सुमिरन, भजन से होती है।

इसलिए हम सब भी भगवान का नाम लें।

आज हम सब गुरु पर्व मना रहे हैं। यहां आए हुए सभी भगवद भक्तों को शुभ आशीर्वाद मंगलाशासन!

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णु गुरुः देव महेश्वरः

गुरुः साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः

रामचरित मानस में सर्वप्रथम तुलसी दास जी गुरु वन्दना करते हैं

बंदऊं गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि

महामोहतम पुंज जासु वचन रवि कर निकर।।

गोस्वामी महाराज कहते हैं, गुरु के चरण कमल समान हैं।

और वचन यानि वाणी सूर्य की किरणों के समान है।

कमल हमेशा सूर्य की किरणों के साथ ही खिलता है। यानि गुरु वे हैं जिनके चरण , उनकी वाणी के साथ चलते हैं। वो जो कहते हैं, वो ही करते हैं।

कमल की तरह चरण होने का अर्थ यह भी है।

गुरु कमल की तरह सभी के साथ रहते हुए भी, सबसे अलग रहते हैं। कमल को छूते समय ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं उसकी पंखुडियां टूट ना जाएं।

गुरु के आश्रम में रहने वालों को भी यह सावधानी बरतनी चाहिए कि गुरु की मर्यादा न टूट जाए। मर्यादा तब टूटती है जब स्वाथ या लोभ से गुरु के आश्रम में जाया जाता है।

गुरु के सान्निध्य में हमारी बुद्धि और विवेक बढ़ता है।

गुरु समुद्र की तरह होते हैं। वो रत्नों का भंडार होते हैं। बस ध्यान रखने वाली बात यह है कि साधक अथवा

शिष्य के पात्र में कोई छेद न हो।

गुरु के एक हाथ में साधक का हाथ और दूसरे में परमात्मा का हाथ होता है। समय आने पर वो दोनों का हाथ मिला देते हैं।

भले ही गुरु परमात्मा से हाथ न मिलाएं। फिर भी शिष्य को अपना हाथ गुरु को थमाए रखना चाहिए। जिसका हाथ गुरु ने थाम लिया, वह निर्भय हो जाता है।

शिष्य को निर्भय कर देना गुरु का प्रमुख लक्षण है।

इतना ही नहीं, गुरु की खोज संसार की सारी खोजों को समाप्त कर देती है।

गुरु को पा लेना ही सबकुछ पा लेना है।

देखिए। हरि को पाना आसान है पर गुरु को पाना बहुत मुश्किल–

कबीर जी कहते हैं–

कबिरा वो नर अंध हैं, गुरु को कहते और।

हरि रूठे तो ठौर है, गुरू रूठे नहीं ठौर।।

रामचरित मानस में गोस्वामी जी ने मंगलाचरण के पहले श्लोक में सरस्वती व गणेश जी का पूजन किया।

मंगलानाम च कर्तारों वन्दे वाणी विनायकौ।

दूसरे में शंकर एवं पार्वती का वन्दन किया

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ

तीसरे श्लोक में अकेले गुरु का–

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रुपिणम।

गोस्वामी जी कहते हैं, गुरु अद्वितीय होते हैं।

गुरु वे हैं जो भगवान से साक्षात्कार करवाते हैं। उन्हें दिखाते हैं।

इसलिए सभी शास्त्रों ने गुरु महिमा का वर्णन किया है।

इस विषय पर एक प्रसंग आता है।

सती को जब राम मिले तो उनके प्रभु होने पर ही वो संदेह कर बैठी। इस भ्रम के कारण उन्हें भस्म होना पड़ा।

एक बार भगवान शिव अगस्त्य ऋषि से भगवान की कथा सुनकर आ रहे थे। मार्ग में भगवान राम को उन्होंने देखा।

संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियं अति हरषु विशेषा।

सती सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु विशेषी।।

संकरु जगतबंध जगदीशा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा।।

अस संशय मन भयऊ अपारा। होई न हृदय प्रबोध प्रचारा।।

सती के मन में संशय उत्पन्न हो गया। भगवान शिव जिनको सब वन्दन करते हैं, जो ईश्वर हैं। वो किन्हें प्रणाम कर रहे हैं।

सती ने यह बात प्रकट नहीं की पर भगवान शंकर उनके मन की बात को समझ गए।

जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी।।

सुनहुं सती तब नारि सुभाऊ। संसय अस न धरिउ उर काऊ।।

भगवान शिव बोले, हे सती सुनो। तुम्हारा स्त्री स्वभाव है। ऐसा सन्देह मन में कभी नहीं रखना चाहिए।

भगवान शिव बोले,

सोई मम इष्ट देव रघुवीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।

यद्यपि शिवजी ने बहुत बार समझाया फिर भी सती जी के हृदय में उनका उपदेश नहीं बैठा।

तब महादेव जी ने मन में भगवान की माया का बल जान मुस्कुराते हुए बोले–

जौ तुम्हारे मन अति संदेहु। तौ किन जाइ परीक्षा लेहु।।

भगवान शिव मन में सोचने लगे, अब सती का

कल्याण नहीं।

मेरे समझाने से भी संदेह दूर नहीं हुआ, इसका मतलब विधाता ही उल्टे हैं। अब सती का कुशल नहीं।

मोरेहु कहै न संशय जाहीं। विधि विपरीत भलाइ नाहीं।।

भगवान शिव ने सोच लिया

होइह सोहिं जो राम रचि राखा। को कर तर्क बढ़ावै साखा।।

और भगवान शंकर

असि कहि लगै जपन हरिनामा

सती भगवान की परीक्षा लेने पहुंच गई। सती ने सीता का रूप धारण किया और आगे आगे चलने लगी।

भगवान राम ने सती जी को पहचान लिया। और मुस्कुराकर बोले।

कहेऊ बहोरि कहां वृषकेतु। बिपिन अकेली फिरहु केहि हेतु।।

भगवान बोले, शिवजी कहां हैं, आप यहां वन में अकेली किस लिए फिर रही हैं।

सतीजी को शर्मिंदगी महसूस हुई और वापिस लौटने लगीं।

तब भगवान शिव बोले-

गई समीप महेश तब, हंसी पृथ्वी कुसलात

लीनहि परीक्षा कवन विधि कहऊं सत्य सब बात

यहां भी सती ने भगवान से झूठ बोल दिया।

कछु न परीक्षा लीन्ह गौसाईं। कीन्ह प्रणाम तुम्हारी नाहिं।।

भगवान शिव ने ध्यान में सब जान लिया। शिव को बहुत विषाद हुआ।

सती कीन्ह सीता कर देखा। सिव उर भयऊ विषाद विशेषा।।

जौ अब करऊं सती सन प्रीता। मिटई भगति प्रभु होई अनीता।।

और भगवान शिव ने विचार किया कि अब सती के इस शरीर से मेरी पति पत्नी रूप में भेंट नहीं हो सकती। और भगवान ने अपने मन में यह संकल्प ले लिया।

संकर सहज सरूप सम्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा।।

मेरे कहने का भाव यह है कि जो गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करता है। उनके वचनों पर संसय करता है, उसका कल्याण नहीं होता।

गुरु ही हमें सत्य का बोध कराते हैं।

गुरु को, भगवान को सरलता पसंद है।

भगवान को चतुराई पसंद नहीं है। वह शबरी को पसंद करते हैं।

शबरी का भाव ही भक्त का भाव है।

शबरी भगवान राम से बोलती हैं-

अधम ते अधम अधम अति नारि। तिन्ह महं में मति मंद अघारी।

कह रघुवति सुनु भामिनी बाता। मानऊ एक भगति कर नाता।

भगवान शबरी को भामिनी यानि अपनी प्रेमिका बताते हैं। क्यों।

क्योंकि उन्हें शबरी की सरलता प्रिय है। कहते हैं मेरा तेरा भक्ति का नाता है।

भगवान कहते हैं-

जाति पांति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।

मुझे जाति आदि, धन दौलत पसंद नहीं है। मैं इनके आधार पर भेदभाव नहीं करता हूं। बल्कि मुझे तो निर्मल मन वाले लोग ही पसंद हैं।

भगवान कहते हैं-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।

मोह कपट छल छिद्र न भावा।।

भगवान शबरी को नवधा भक्ति का ज्ञान देते हुए

खुद कहते हैं–

नवम सरल सब सन छल हीना।

मम भरोस हियं हरष न दीना।।

सरलता को नौवीं भक्ति कहते हैं– भगवान को सरल हृदय पसंद हैं।

लेकिन ध्यान देने वाली बात है– भगवान का मिलना उतना कठिन नहीं है। जितना हमारा सरल होना।

सरलता सबसे ज्यादा कठिन है।

इतना सरल जो सरलता से विश्वास कर ले।

एक भक्त की बात मैंने सुनी थी। वो घर में रहता। घरवाले उससे बड़े परेशान– क्योंकि वो कुछ नहीं करता था। केवल खाता था। बस खूब खाये और पड़ा रहे और खूब खायेगा। तो करेगा क्या। जहां खाये वहीं लुढक जाये। घरवालों ने कहा निकल जाओ यहां से। दो ढाई सेर खाते एक समय में और काम धाम कुछ करते नहीं। बिचारा अब जाये कहां। उसे एक महात्मा दिखाई दिए मंदिर में। जो मंदिर के बाहर बैठे थे। महात्मा बड़े तंदुरुस्त थे। महात्मा होते ही ऐसे हैं। प्रसन्न मस्त। उसने सोचा यह खूब खाते होंगे। तभी तो इतने तंदरुस्त हैं मोटे हैं। उनके पास गया और बोले, महाराज इतने में उनके चेना निकले वो भी ऐसे ही तंदुरुस्त। अरे यहां तो सब ऐसे ही हैं। वो बोला, महाराज हमको भी चेला बना लो। महात्मा बोले, रहो। मंत्र दे दिया। तुलसी की माला कंठी पहना दी। नाम रख दिया– भोला राम।

काम बताओ। बोले काम कुछ नहीं, भगवान पूजा आरती में रहा करो, राम राम किया करो।

बोले ठीक है– भोला बोला, महाराज पंगत?

महात्मा बोले– दो समय होती है, खूब प्रेम से भोजन पाओ। मैं दो पंगत में?

महात्मा बोले, तुम चार पंगत में बैठो। कोई दिक्कत नहीं। उसको लगा यह बढ़िया कुछ करना नहीं। और खाने को माल। यह बढ़िया है। वो मंदिर में ही रह गया।

पर उसे कया पता, यहां भी मुसीबत आएगी। एक दिन सवेरे से कुछ बना ही नहीं भंडार में। सब ऐसे ही चूल्हे पड़े ठंडे, कुछ नहीं।

भोला बोला, महाराज माल कुछ बन नहीं रहा है।

अरे मैंने बताया नहीं, आज एकादशी है। बोला– एकादशी का मतलब? महात्मा बोले– ना कुछ बनेगा, ना कुछ मिलेगा।

तो वह बोला– हमको भी नहीं मिलेगा।

हां तुम्हें भी नहीं मिलेगा।

भोला बोला– चेला बहुत हैं। हमसे क्यों करवाओ।

बोला– नहीं ये तो करना ही पड़ेगा।

बोला अगर हमें आज एकादशी करा दी तो हम तो द्वादशी देख ही नहीं पाएंगे। आज ही शाम तक खेल खत्म।

महात्मा बोल, भाई बहुत कठिनाई है क्या।

महाराज मैं भोजन के बिना नहीं रह सकता। महाराज बोले–आश्रम तो कुछ बनेगा नहीं। तुम बना लोगे।

मरता क्या नहीं करता। बोला– हम सब बना लेंगे।

महात्मा बोले– जाओ भंडारा से सामग्री ले लो। अब उसने ढाई सेर आटा आलू नमक मिर्च मसाला घी ले लिया।

महात्मा बोले– अब तुम वैष्णव हो गए। वैसे तो नहीं बनाना चाहिए भोजन। पर भोजन प्रसाद बुद्धि से ग्रहण करना। पहले भगवान को भोग लगाना।

ठीक है महाराज।

जल्दी जल्दी में उसने सामान समेटा। महात्मा बोले वहां जाना नदी के किनारे पेड के नीचे। भोला वहां पहुंच गया। जैसा बना बेचारे से वैसा भोजन बनाया। आलू का चोखा, रोटी गुड घी सब तैयार करके, भूख भी लग आई। रोज तो बना बनाया मिलता था। उसे याद आया गुरुजी ने कहा था भगवान को भोग लगा लेना। कितना सरल– तुरंत भगवान को बुलाने लगे।

राजा राम आइये प्रभु राम आइये

मेरे भोजन को भोग लगाइये
मेरे भोजन को भोग लगाइये

नहीं आए भगवान तो क्या बोला।
आचमनी अर्घा ना आरती यहां यही मेहमानी।
रूखी रोटी पाओ प्रेम से पीओ नदी का पानी।
राजा राम आइये प्रभु राम आइये
मेरे भोजन को भोग लगाइये।

यहां तो नदी का पानी है। रूखी रोटी है आना हैं तो जल्दी आ जाओ। हमको भूख लग रही है। भगवान नहीं आए।

तो बोला- पूडी और कचौडी भगवान के सेवक ने ना बनाई
और मिठाई तो है ही नहीं।

फिर भी नहीं आए भगवान तो एक सरलता से बात कही। उस पर रीझ गए भगवान। बोले, सुनो हम समझ गए आप इसलिए नहीं आ रहे यहां। रूखी रोटी काहे को जाएं खाने, नदी का पानी। मंदिर में तो तरह तरह के व्यंजन मिलेंगे। तो बोला, भगवान उस धोखे में नहीं रह जाना। वहां से तो जान बचाकर हम ही आए हैं।

भूल करोगे यदि तज दोगे भोजन रूखा सूखा
एकादशी आज मंदिर में बैठे रहोगे भूखा
राजा राम आइये प्रभु राम आइये
मेरे भोजन का भोग लगाइये।
मंदिर में एकादशी है। यहां आ जाओ
और इस सरलता पर -
नवम सरल सब सन छल हीना..
भगवान प्रकट हो गए।

लेकिन भगवान भी कम कौतुकी नहीं। जितना वो सरल भगवान वैसे ही लीला करने को तैयार। भगवान अकेले नहीं आए।

सीता समारोह पित वाम भागे

भगवान को देखा, उनकी सुन्दरता देखी, देखकर प्रसन्न तो बहुत हुआ लेकिन उदास हो गया। गुरुजी ने तो एक भगवान के लिए कहा था। ये तो दो आए हैं। अब कभी भगवान की तरफ देखे कभी रोटियों की तरफ देखे। भगवान ने कहा-क्यों। आ गए ना हम, बोले-हां। आ गए सो तो ठीक है। जो है सो बैठो। भगवान बोले-क्या बात है। भोला बोला- हम सोच रहे थे एक का इंतजाम करना है, आप तो दो हैं। तो कोई बात नहीं, थोड़ी बहुत एकादशी तो हमारी करा ही दोगे आप लोग। जो कुछ है सब बिराजो।

कितना सरल है कि विश्वास भी नहीं होता। क्योंकि हम लोग सरल नहीं हैं। भगवान श्री सीताराम जी बैठ गए।

उनके सामने परोस दिया। मैं भूखा तो रहा पर आपको देचा कर लगा बहुत अच्छा। पर एक काम करना, अब मैं समझ गया, आप दो आते हो। अब मैं इंतजाम और ज्यादा करके रखूंगा।

अगली एकादशी को, लेकिन इतना परेशान नहीं करना। जल्दी आ जाना।

भगवान बोले- आ जाऊंगा।

उसने आकर गुरुजी से कुछ नहीं कहा- इतना सरल था। वो समझता था, भगवान ऐसे ही आते होंगे।

अगली एकादशी को बोला- गुरुजी कुछ सामान बढवाओ।

गुरुजी बोले- क्यों। बोले-वहां दो भगवान आते हैं।

गुरुजी ने सोचा, भूखा रहा होगा। इसलिए कह रहा है। बोला-बढा दो , बढ़ा दो। एक सेर सामान और बढ़ा दो।

अब वो साड़े तीन सेर आटा सामान लेकर गया भोजन बनाया उसने और बुलाया भगवान को। भगवान तो इंतजार ही कर रहे थे। जैसे ही उसने कहा- राजाराम आइये। सीताराम आइये। मेरे भोजन का भोग लगाइये। मेरे भोजन को भोग लगाइये।

जैसे ही पुकारा, भगवान प्रकट हो गए। लेकिन

इस बार राम बाम दिस जानकी लखन दाहिने ओर-
दक्षिणो लक्ष्मणो।

वो उसने तीनों को देखा। बोला- हद हो गई। एक को बुलाओ तो दो आते हैं, और दो का इंतजाम करो तो तीन आते हैं। ये कौन हैं महाराज। भगवान बोले- ये हमारे छोटे भाई हैं। हूं। छोटे भाई। सचमुच। लगते तो नहीं। ना रूप से ना स्वभाव से, कहीं से नहीं लगते।

पकड़ लाए क्या कोई.. नहीं नहीं हमारे छोटे भाई हैं।

हाथ जोड़कर बोला, प्रभु बुरा नहीं मानना छोटे भाई हैं सो तो अच्छा है। आ गए तो कोई बात नहीं लेकिन एक बात बताओ। हमने ठाकुर जी के भोग का ठेका लिया है या ठाकुर जी के खानदान का। पूरे घर का। गुरुजी ने कहा था भगवान को भोग लगाना- दो आए अब ये भाई साहिब भी आ गए।

अब रामजी खूब हंसे जाएं। जानकी मैया भी हंसी। लक्ष्मण को लगा अच्छी जगह ले आए भगवान। क्या स्वागत हुआ है आज।

लेकिन वो बोला, क्या कहूं। भूखा भले रह जाऊं पर आप लोगों को देखकर मुझे बड़ा अच्छा लगा। अब बैठो। तीनों की बैठो। पावो अब जो कुछ है, एक ही ज्यादा है। दो का इंतजाम तो है ही। भगवान खूब हंसते रहे। लक्ष्मण जी भी खूब हंसे।

जब चलने लगे तो बार बार चरणों में गिर रहे आंखों में आंसू आ जाएं। लगते आप बड़े सुंदर हो लेकिन एक काम करो। अगली एकादशी को अभी से बता जाओ, कितने आओगे। ताकि हम उतना ही इंतजाम करें। बस यही झंझट हैं। बाकी तो कोई झंझट नहीं। पहले बता दिया करो कितने आओगे। तो वैसे ही इंतजाम कर लें। भगवान बोले- हम आ जाएंगे-

आया तो भी नहीं कहा गुरुजी से- सोचा कुछ दिन तो आराम से बीतें- अब फिर अगली एकादशी- गुरुजी बोले आज एकादशी है चेला। बोला - हां आज एकादशी है।

तो उदास क्यों है। बोला- अरे महाराज वहां बहुत लोग आते हैं। तो क्या करें। हमारा सामान बढ़ाओ। सात सेर आटा करो। कम से कम सात सेर। हां और उसी हिसाब से सामान।

गुरुजी समझ गए इतना तो ये खा नहीं सकता। ये जरूर बेचता होगा। गुरुजी बोले, सात सेर नहीं, आठ सेर दे दो। ले जाने दो इसे और पीछे पीछे चलें, देखते हैं यह क्या करता है।

ले गया सामान लेकिन यह भक्त बड़ा विचित्र सरल आदमी है।

आज उसने भोजन बनाया नहीं। बोला- पहले बुला लेता हूं कि कितने आदमी हैं। तभी भोजन बनाउंगा।

भोजन बनाने से पहले ही बुलाने लगा
राजाराम आइए सीताराम आइए, लक्ष्मण राम आइये
मेरे भोजन को भोग लगाइए
जब जंगल में भक्त ने कीन्ही प्रेम पुकार
तब प्रकट दिव्य राम दरबार।

जो पुकारा तो भगवान सीताराम भरत जी, लक्ष्मण जी,शत्रुघ्न जी, हनुमान जी, सारे आ गए।

और जो इसने देखा। बोला- जय हो, जय हो लेकिन एक बात सुन लो। क्या। एक को बुलाया तो दो आए, दो को बुलाया तो तीन आए। आज तो हद कर दी, सारे इकट्ठे। लेकिन हमारी बात भी सुन लो। क्या। हमने भोजन नहीं बनाया है। वो रखा सामान। सो बनाओ और खाओ।

भगवान बोले- क्यों। तुम क्यों नहीं बनाते। बोला- तब हमें भोजन मिलना ही नहीं है तो बनाने से क्या लाभ। आप ही बनाओ और पाओ।

मोते नहीं बनत बनाये, भोजन आप बनावहुं अपने
बहुत दिन संग पाये, मोते नहीं बनत बनाये।
तुम नहीं तजत सुब्रान आपकी हम केते समझाये।

हमने कितना समझाया अपनी आदत छोड़ दो। और आज तो आपने हद कर दी।

नर नारिल को कौन कहे, हनुमान जी की ओर देखकर बोला

इस वानर भी संग लाये। इक वानर हु संग लाए।

मोते नहीं बनत बनाये।

हम से नहीं बनता है।

प्रथम दिवस जब भोजन के हित आसन मैंने लगाई

उधर में न भई सब्यो जब सिय सन्मुख आई

फिर आये भाई पर भाई

और निराहार ही रहो आग में परत दिखाई

भगवान खूब हंसे। बोले- हंसने से काम नहीं चलेगा। बनाओ और खाओ। और शुरुआत करो। बैठ गया वृक्ष के नीचे।

भगवान बोले- भई भक्त की राजी, आज बनाओ।

भोजन व्यवस्था किसने संभाल ली।

विश्व भरण पोषण कर जोई। जाकर नाम भरत अरु होई।

भरत जी रसोई बनाने लगे। लक्ष्मण जी लकड़ी बीनकर लाने लगे। हनुमान जी पोता लगाने लगे। शत्रुघ्न भाजी काटने लगे। जानकी माता आकर बैठी तो तमाम महात्मा इकट्ठे हो गए।

हमें भी प्रसाद मिले। हमें भी प्रसाद मिले। वो भोला- आंख बंद किए बैठा था। पूछा, आंख बंद किए क्यों बैठा है।

बोला- जब कुछ मिलना ही नहीं है तो देखने से क्या फायदा।

आवाज सुनी तो देखा कई महात्मा दिखाई दिए। बोला- थोड़ा बहुत कुछ बचता भी तो यह नहीं बचने देंगे।

गुरुजी आए पीछे से देखने कि यह सामान का क्या करता है। तो गुरुजी को कोई नहीं दिखा। चेला बैठा दिखा और सामान रखा हुआ देखा।

गावो विश्वस्य मातरः
गौ समस्त विश्व की मां है।
गौ की सेवा से अनेक तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम की गौशाला में सैकड़ों गौएं रहती हैं। यहां अनेक सेवादार गौसेवा कर पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति प्रतिदिन चारा आदि का दान करते हैं। आप भी इस पुण्य के भागी बन सकते हैं। यथायोग्य सेवा, चारा, दवाईयां आदि की सेवा आप भी कर सकते हैं। आइये! इस पुण्य कार्य में सहयोग करें।

श्री नारायण गौशाला
फरीदाबाद (हरि.) भारत
संपर्क- राजेंद्र छंगा जी
8860825054

गुरुजी आए और बोले, बच्चा क्या हो रहा है। बोला– गुरुजी भले आए, देखो कितने भगवान मेरे पीछे लगे हैं। इतने बैठे हैं। गुरुजी बोले– हमें तो कोई नहीं दिखाई दे रहा। सामान दिख रहा है और तुम दिख रहे हो। अब भगवान मुस्कुराए तो रोकर बोला। यह दोहरी मुसीबत है। गुरुजी ने तो करा नहीं पाई, तुमने आज पूरी एकादशी करवा दी। और उसमें भी गुरुजी को पता नहीं लगने दे रहे। इनको भी दिखो। भगवान बोले, उन्हें नहीं दिखेंगे।

क्यों नहीं दिखोगे। वो तो हमारे गुरुजी हैं। हम कुछ नहीं जानते, वे तो सबकुछ जानते हैं। इतने महान हैं।

भगवान ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं तुम्हारे गुरु बहुत महान हैं। तुम्हारे गुरु बहुत योग्य विद्वान हैं। भजनानन्दी हैं। फिर भी मैं उन्हें नहीं दिखूंगा। मैं तुम्हें ही दीखूंगा।

बोला– क्यों ऐसी क्या बात है। बोले– तुम्हारे गुरुजी में सब विशेषताएं हैं लेकिन जितने सरल तुम हो, उतने वो सरल नहीं हैं।

और मैं तो सरल के लिए सरलता से मिलता हूं।

नवम सरल सब सन छल हीना..

गुरुजी ने पूछा क्या बात है। चेला बोला– भगवान ऐसो कह रहे हैं। कि आप सरल नहीं हो। गुरुजी को इस बात पर रोना आ गया कि सचमुच सब कुछ जीवन में मिला लेकिन सरलता नहीं मिली। और जिससे भगवान मिलते थे वो ही नहीं मिला। अब गुरुजी भावविभोर होकर रोने लगे। तो भगवान प्रकट हो गए।

और उनको दर्शन दिया। भगवान तो सरलता पर रीझते हैं। इसलिए भगवान ने कहा–

नवम सरल सब सन छल हीना, मम भरोस हिस हरष न दीना।

गरुण जी, जिनकी पीठ पर भगवान स्वयं विराजमान रहते हैं। लेकिन वो तब तक भ्रमित रहे जब तक उन्हें कागभुशंडि जैसे सदगुरु नहीं मिले।

रावण को बगैर गुरु ने भगवान शंकर मिले तो वहां अहंकार हो गया। और रावण का हश्र हुआ। आप सब जानते हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार गुरु शिष्य को नया जन्म देते हैं।

नया जन्म तभी संभव है जब पहले वाले को मार दिया जाए।

गुरु का आश्रय लेने पर भ्रम अहंकार काम क्रोध मिट जाते हैं और शिष्य का पुराना रूप खत्म हो जाता है।

नया रूप ही नया जन्म है।

एक बार तो शिष्य को अपनी हस्ती मिटानी ही होती है। इसके बाद ही दिव्य पुष्प खिलते हैं।

गुरु के ऊपर पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा रखनी चाहिए।

औरंगजेब की आज्ञा से गुरु तेग बहादुर की दिल्ली में हत्या कर दी गई। बादशाह को इतने से भी संतोष नहीं हुआ। उसने आज्ञा दी, इसकी मृत देह का किसी प्रकार का संस्कार नहीं होना चाहिए। नगर के चौराहे पर जब उनकी हत्या की गई। वहीं पर इसका शरीर सड़ेगा। और उसे कोई उठाने या छूने का प्रयत्न करेगा तो उसे प्राण दंड दिया जाएगा।

ऐसा औरंगजेब ने हुकम कर दिया। और वहां कुछ सैनिक नियुक्त कर दिए गए।

गुरु गोबिंद सिंह उस समय सोलह वर्ष के बालक थे।

पिता के शरीर का अंतिम संस्कार चाहे जैसे हो करना ही है। यह उन्होंने निश्चय कर लिया। वो इस प्रतिज्ञा से पंजाब से दिल्ली जा रहे थे। किंतु क्रूर औरंगजेब उसके साथ कैसा बर्ताव करेगा, इसका कोई ठिकाना नहीं था। सभी लोगों में चिंता व्याप्त थी।

गुरु गोबिंद सिंह जी को मार्ग दो गुरुभक्त मिले जो पिता और पुत्र थे। वो बोले, आप यहां गुप्त रूप से ठहरें। हम दोनों गुरुदेव का शरीर ले आएंगे। दिल्ली नगर में जाना

आपके लिए ठीक नहीं।

एक निर्धन गाड़ी वाले सिख ने अपने पुत्र के साथ दिल्ली जाने का निश्चय किया और उसने नगर से कई मील दूर ही गुरु गोबिंद सिंह जी को रुकने का आग्रह किया। उन पिता पुत्र के आग्रह को उन्होंने स्वीकार किया।

उन पिता पुत्र ने पूछताछ कर गुरु तेग बहादुर के शरीर का पता लगा लिया। उस शरीर से तीव्र बदबू आ रही थी। वहां नियुक्त सैनिक दुर्गंध की वजह से थोड़ा दूर हो गए थे। लोगों ने भी वह मार्ग प्रायः छोड़ दिया था। दुर्गंध के कारण।

दोनों पिता पुत्र जब वहां पहुंचे तब पिता ने पुत्र से कहा, हम दोनों में से एक को प्राण त्याग करना पड़ेगा। क्योंकि यदि इस शव के स्थान पर दूसरा शव यहां ढंककर नहीं रखा जाएगा। तो पहरेदार सैनिकों की दृष्टि पड़ते ही वो सावधान हो जाएंगे। औरंगजेब के सैनिक सिखों के एक मात्र आधार बालक दसवें गुरु को ढूंढने निकल पड़ेंगे। तुम युवक हो तुम्हारा शरीर सबल है।

गुरु के इस शरीर को तुम उठाकर भली प्रकार से ले जा सकते हो। इसलिए मुझे मरने दो। पुत्र कुछ कहे इससे पहले पिता ने अपनी कटार छाती में मार ली। और वह गिर पड़ा।

पुत्र ने पिता का शव वहां मार्ग पर लिटाकर ढंक दिया और गुरु तेग बहादुर का शरीर कंधे पर डालकर चल पड़ा। वह निर्विघ्न गुरु गोबिंद सिंह के पास पहुंच गया।

क्योंकि जहां इतना त्याग व श्रद्धा होती है वहां कुछ बाधा नहीं आती। यह है गुरु भक्ति।

इसलिए गुरु के प्रति समर्पित होना चाहिए। बिना गुरु के कल्याण नहीं।

इसलिए गुरु दर पर जाते रहना चाहिए। सेवा करते रहना चाहिए।

हमसे जुड़ने के लिए आज ही हमारे फेसबुक पेज श्री सिद्धदाता आश्रम को लाइक करें

श्री सिद्धदाता आश्रम (श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम) की गतिविधियां भजन, सत्संग, लाइव आरती, श्री गुरु महाराज जी के दर्शन एवं आने वाले कार्यक्रमों की सूचनाएं प्राप्त करने लिए आप विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म के जरिये हमसे जुड़ सकते हैं या नीचे दिए लिंकों को टाइप कर सीधे हमारे सोशल मीडिया पेजेस (फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, मोबाइल ऐप) पर जा सकते हैं।

Connect with us on :
Facebook - https://www.facebook.com/ShriSidhdataAshram

Free Mobile App - Shri Sidhdata Ashram

(Downloard the App on Google Play Store)

Visit our Website:
https://www.shrisidhdataashram.org

प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सर्च करें
#ShriSidhdataAshram

भगवान का वामन अवतार

श्री सुदर्शन संदेश

भगवान परशुराम का जन्म वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हुआ था। इन्हें विष्णु जी का छठा अवतार माना जाता है। वर्तमान में उनका जन्मस्थल मध्य प्रदेश राज्य के इंदौर में जनापाव नामक पहाड़ियां हैं। हिंदू मान्यताओं के अनुसार सात चिरंजीवी देवों में से एक परशुराम आज भी पृथ्वी पर ही हैं। यही कारण है कि अवतार होते हुए भी उन्हें राम या श्रीकृष्ण की तरह नहीं पूजा जाता है। हालांकि दक्षिण भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में भगवान परशुराम के कई प्रसिद्ध मंदिर है। कल्कि पुराण के अनुसार अभी भगवान विष्णु के अंतिम अवतार कल्कि का होना शेष है, जिनके युद्ध कला के गुरु होंगे भगवान परशुराम। हिंदू पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख है कि भगवान परशुराम ने ही सहस्त्रार्जुन जैसे घमंड में भरे राजा का वध किया था। कहा जाता है कि महर्षि जमदाग्नि के चार पुत्र थे। उनमें से परशुराम चौथे थे। जन्म के समय परशुराम का नाम राम था किंतु जब उन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या की और शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें तरह-तरह के अस्त्र भेंट किए, तो उनका परशु यानी फरसा राम को बहुत प्रिय हुआ और अंतत: यह उनके नाम के साथ जुड़ गया, जिसके फलस्वरूप ये परशुराम कहलाए।

उल्लेख मिलता है कि भारत के अधिकांश गांव परशुराम ने बसाए थे। उनके क्रोध से सभी डरते थे, तभी एक पौराणिक कथा के अनुसार उन्होंने तीर चलाकर गुजरात से लेकर केरल तक समुद्र को पीछे जाने पर भी मजबूर किया और नई भूमि का निर्माण किया। परशुराम जयंती पर व्रत की परंपरा है।

एक बार परशुराम ने पिता जमदग्नि के आदेश पर

एक बार परशुराम ने पिता जमदग्नि के आदेश पर अपनी माँ का सिर धड़ से अलग कर दिया। इससे प्रसन्न होकर उनके पिता ने उनसे वर मांगने को कहा। अपने वर में परशुराम ने पुन: अपनी माता को जीवित करने को कहा। इस प्रकार उनकी माता पुन: जीवित हो उठी थी।

अपनी माँ का सिर धड़ से अलग कर दिया। इससे प्रसन्न होकर उनके पिता ने उनसे वर मांगने को कहा। अपने वर में परशुराम ने पुन: अपनी माता को जीवित करने को कहा। इस प्रकार उनकी माता पुन: जीवित हो उठी थी।

एक बार राजा सहस्त्रबाहु अपने सैनिकों के साथ ऋषि जमदग्नि के आश्रम में आये थे। तब उनका मन ऋषि जमदग्नि की गाय कामधेनु पर आ गया था लेकिन जमदग्नि ने उन्हें वह गाय देने से मना कर दिया। अहंकार में राजा सहस्त्रबाहु ने आश्रम को तहस-नहस कर दिया तथा वह गाय लेकर चले गए। जब परशुराम को इस बात का ज्ञान हुआ तो उन्होंने सहस्त्रबाहु का वध कर दिया तथा कामधेनु को वापस ले आये।

उसके पश्चात अपने पिता के कहने पर परशुराम तीर्थयात्रा पर चले गए। पीछे से सहस्त्रबाहु के पुत्रों ने जमदग्नि का वध कर दिया। जब परशुराम तीर्थयात्रा से वापस लौटे तब अपने पिता की हत्या से इतने क्रोधित हो उठे कि उन्होंने 21 बार राजा सहस्त्रबाहु के हैहय क्षत्रिय वंश का पृथ्वी से समूचा विनाश कर दिया। इसके पश्चात उन्होंने सन्यास ले लिया।

यह एक मिथ्या बात है कि भगवान परशुराम ने संपूर्ण पृथ्वी से पूर्णतया 21 बार क्षत्रियों का संहार कर दिया था अर्थात पृथ्वी को क्षत्रिय जाति रहित कर दिया था। दरअसल उन्होंने क्षत्रिय जाति के हैहय वंश का इस पृथ्वी से 21 बार संहार किया था क्योंकि उन्होंने उनके पिता का वध किया था।

कुछ समय पश्चात अयोध्या में भगवान विष्णु ने अपना सातवाँ अवतार श्रीराम के रूप में लिया। जब श्रीराम अपने गुरु विश्वामित्र के साथ माता सीता के स्वयंवर में आये थे तब उन्होंने शिव धनुष को तोड़ डाला था। शिव धनुष के टूटने की गर्जना तीनों लोकों में फैल गयी थी तथा महेंद्रगिरी पर्वत पर तपस्या कर रहे परशुराम को भी यह सुनी थी।

उसके पश्चात वे क्रोध में राजा जनक की नगरी पहुंचे तथा शिव धनुष तोड़ने वाले का नाम पूछा। तब उनकी श्रीराम के छोटे भाई तथा शेषनाग के अवतार लक्ष्मण से तीखी बहस हुई लेकिन जब उन्हें यह ज्ञान हुआ कि श्रीराम स्वयं भगवान विष्णु का सातवाँ रूप हैं तो वे वहां से चले गए।

श्री रामानुज संप्रदाय– आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

गत अंक से जारी

उस दिन विष्णु को माला नहीं दी जा सकी। रात को विष्णु ने स्वप्न में आकर उनसे कहा, आज मुझे तुमने तुलसी-माला क्यों नहीं दी? मैं अपने भक्तों के अंग से स्पर्श की हुई वस्तु से और भी सन्तुष्ट होता हूं। आण्डाल को मानुषी मत समझना। अगले दिन पेरिय आलवार ने देखा कि पिछले दिन आण्डाल द्वारा पहनी गयी तुलसीमाला शुष्क न होकर ताजी बनाई गई नई माला से अधिक उज्ज्वल तथा कान्तिमान होकर शोभित हो रही है। उन्होंने द्विधा छोड़कर तत्काल वह माला उठाकर श्रीविग्रह को पहना दिया और उस दिन अपने इष्टदेव के असाधारण सौंदर्य का विकास देखकर वे रोमांचित हो गए और नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए परम शान्ति का अनुभव करने लगे।

आण्डाल वयस्क हो जाने पर भी बालिका के समान ही सरल तथा कृष्णगतप्राण थीं। विष्णुभक्ति मानो मूर्तिमन्त होकर आण्डाल के रूप में अभिव्यक्त हो रही थी। उन्होंने मधुर वाग्विन्यास सह, प्रेमरूपी अमृत-सरोवर की है, वे चिरकाल तक भक्तजन की सर्वोत्कृष्ट सम्पदा के रूप में परिगणित होंगी। मानो उनके प्रेमघन हृदय ने ही द्रवीभूत होकर उन स्त्रोतों का रूप धारण कर लिया है।

वे सर्वदा मधुर वाणी ही बोलती थीं, इसलिए उनका अन्य एक नाम गोदा है। गां (मनोहरां) वाचं (सर्वस्मै) प्रयच्छति इति गोदा। इन मधुर-भाषिणी का श्री रंगनाथ जी ने पणिग्रहण किया था, अत: उन्हें रंगनायिका भी कहते हैं। वे ईसापूर्व 3005 सन् में धरणीतल पर अवतीर्ण हुई थी। जिन्होंने पौष मास के ज्येष्ठा नक्षत्र में चोल-राज्यस्थ (त्रिचनापल्ली के निकट) मण्डंगुड़िपुर में जन्म ग्रहण किया, मैं उन्हीं भक्तपरदेणु नामक श्री विष्णु के वनमालांश से अवतीर्ण भक्तश्रेष्ठ की शरण लेता हूं।

तमिल भाषा में इनका नाम तोंडरड़िप्पोड़ि (भक्तपदरेणु) आलावार है। इन्हें श्रीविष्णु के लिये माला

गूंथने से लगाव था, इसलिए भक्तों ने इन्हें श्री वनमाला का अंशावतार माना है। नारायण-सेवा के अलाव ये और कोई कार्य नहीं करते थे। भगवान उनकी पूजा से अतीव सन्तुष्ट होते थे। इन्होंने ईसापूर्व सन् 2814 में जन्म लिया था।

कहते हैं कि एक बार श्रीमन्नरायण ने श्रीलक्ष्मी देवी के सम्मुख यह कहकर उक्त प्रमिका-प्रवर की अतिशय प्रशंसा की थी कि त्रिभुवन में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो इनके मधुर हृदयके अविच्छिन्न प्रेमप्रवाह में बाधक हो सके। इस पर श्री जगज्जननी ने मृदु हास्य के साथ कहा था कि स्त्री कटाक्ष के लिये कुछ भी असाध्य नहीं है और अपनी बात को प्रमाणित करने के लिये उन्होंने तुरंत पति के अनजाने ही अपनी एक दासी को निर्देश दिया कि वह मनोही वेषभूषा धारणकर सर्वछा इन भक्तप्रवर की आंखों के सामने बनी रहे।

एक समय वे अपने उद्यान से पुष्प आदि चुनकर माला गूंथ रहे थे कि उसर समय एक मुनिजन-मनमोहिनी, सर्वांग-सुन्दरी, कटाक्ष-बाण-वर्षिणी युवती, हाथ में एक दिव्श माला लिये, गद्गद् मधुर सम्भाषण के साथ उनके समीप पहुंचकर कहने लगी, प्रभो, दासी द्वारा निर्मित इस माला को आज कृपा करके श्री गोविन्द जी के श्रीकण्ठ में पहना देंगे? मैं परदेशी हूं, यहां नई नई ही आई हूं। यहां कुछ दिन रहने की इच्छा है। यहां मेरा सगा-सम्बन्धी कोई भी नहीं है। आप महापुरूष हैं, अत: सभी के आत्मीय हैं। इसलिए साहा करके मैं आपके श्रीचरणों में उपस्थित हुई हूं।

सुन्दर माला देखते ही भक्त के मन में सहज ही उससे अपने इष्टदेव को सजाने की इच्छा हुई और युवती की मधुर वाणी सुनकर हृदय भी थोड़ा द्रवीभूत हुआ। उन्होंने बड़े आग्रहपूर्वक उसे स्वीकार किया। तब से वह सुन्दरी प्रतिदिन उनके पास एक सुन्दर माला ले आती और दासी के समान उनके पुष्पोद्यान में वारि-सिंचन किया करती। सुवती की सौजन्यता तथा मधुर स्वभाव देखकर महाभक्त का मन भी क्रमश: श्री गोविन्द के चरणपथ से स्खलित करने लगा। अन्तत: वे ईश्वर के लिए उन्मत्त होने के स्थान पर उस युवती के संग की इच्छा से आकुल हो उठे। युवती ने अपने हाव-भाव, कटाक्ष तथा रूप-लावण्य की सहायता से उन्हें और भी मोहित किया। आखिरकार अधीर होकर जब उन्होंने उस बाला के समक्ष अपना मनोभाव व्यक्त किया, तो उसने उनके समक्ष स्वर्णमुद्रा की मांग रखी। निर्धन ब्राह्मण निरूपाय होकर रोने लगे। उस दिन उनका मन्दिर में जाना नहीं हो सका। नारायण अपने सेवक की अनुपस्थिति का कारण समझकर स्वयं ही छद्मवेश में उनके पास पहुंचकर... **अगले अंक में जारी...**

जय श्रीमन्नारायण !!

श्री सिद्धदाता आश्रम अब आपके

instagram पर भी!

श्री सिद्धदाता आश्रम की गतिविधियां एवं आने वाले कार्यक्रमों की सूचनाएं प्राप्त करने लिए इंस्टाग्राम पर सर्च करें #shrisidhdataashram

या नीचे दिए लिंक को टाइप कर सीधे हमारे इंस्टाग्राम पेज पर जाएं:-

https://www.instagram.com/
shrisidhdataashram/

भाष्यकार रामानुज स्वामी चरित्

रामानुज के गुरू यादवप्रकाश

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

...गत अंक से जारी

भक्तिमय रामानुज दास्यभाव की प्रतिमुर्ति थे। अतः यादवीय सिद्धान्त उनके लिये कभी प्रीतिकर नहीं हो सकता था। परंतु गुरु की गौरवरक्षा के लिये वे कभी उनकी शिक्षा का दोष बताने का दुस्साहस नहीं करते थे। इच्छा होने पर भी वे उसका दमन कर डालते थे।

एक दिन प्रातः काल का पाठ समाप्त हो जाने पर जब शिष्यगण मध्यान्ह का भोजन करने अपने अपने घर चले गए, तो यादवप्रकाश ने अपनी परमप्रिय शिष्य रामानुज को अपने शरीर पर तेल मल देने का आदेश दिया। उस समय भी एक शिष्य पाठ के दुरूह अंशों को समझने के लिए गुरुदेव से प्रश्न कर रहे थे। वे छान्दोग्य उपनिषद् का अध्ययन करते थे। उनके प्रथम अध्याय के छठें खण्ड के सातवें मंत्र के पूर्वांश में जो कप्यासम् शब्द आया है, उसी का ठीक ठीक अर्थ शिष्य को हृदयंगम नहीं हो पा रहा था। वह मंत्रांश इस प्रकार है-तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीकमेवमक्षिणी। यादव पूज्यपाद शंकराचार्य के मतानुसार कप्यासम् शब्द का अर्थ बन्दर के अधोभाग से लगाकर मंत्रांश की इस प्रकार व्याख्या करने लगे, उन स्वर्णिम पुरुष के दोनों नेत्र बन्दर के अधोदेश के सदृश लाल कमल के तुल्य है। यह असंगत हीन-उपमायुक्त व्याखया सुनकर तैलमर्दन में निरत रामानुज का कोमल व भक्तिपूर्ण हृदय विगलित हुआ और नेत्रों से अश्रु के रूप में अग्निशिखा के समान प्रवाहित होकर यादव के जांघ पर गिर पड़ा। ज्वलन्त अंगारे के समान तप्त अश्रुधारा के स्पर्श से यादव चौंक गए और दृष्टि उठाकर देखने पर उनके लिये समझना बाकी नहीं रहा कि यह अंगारा नहीं, अपितु उनके प्रिय शिष्य रामानमुज की गरम अश्रुधारा है। जब उन्होंने विस्मयपूर्वक शिष्य से दुख का कारण पूछा, तो रामानुज बोले, भगवन्, आपके समान महानुभाव के मुख से ऐसी असंगत व्याख्या सुनकर मैं मर्माहत हुआ हूं। सर्वमंगलमय, अखिल सौन्दर्य के आधार, सच्चिदानन्दमय विग्रह, परात्पर भगवान के साथ बन्दर के अधोप्रदेश की तुलना कितना असम्भाव्य व पापजनक लगता है, यह किस मुख से कहूं?

अगले अंक में जारी

बाबा की पुण्यतिथि

श्री सिद्धदाता आश्रम में 1-3 वैकुण्ठवासी गुरु महाराज की पुण्यतिथि के दिन विशाल स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर एसएसबी हास्पिटल एवं अन्य चिकित्सा संस्थानों और आश्रम के भक्त चिकित्सकों के सहयोग से हजारों लोगों के स्वास्थ्य की निशुल्क जांच उपरांत दवाइयां प्रदान की गईं। परमपूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने सभी को आशीर्वाद दिया।

4-श्री गुरु महाराज जी गोवा में एक भक्त परिवार के विवाह उत्सव में वर वधु को आशीर्वाद देने भी पहुंचे, 6-उनकी मुलाकात भाजपा नेता मनोज तिवारी को भी आशीर्वाद दिया।5-वह गोवाबीच भी पहुंचे।

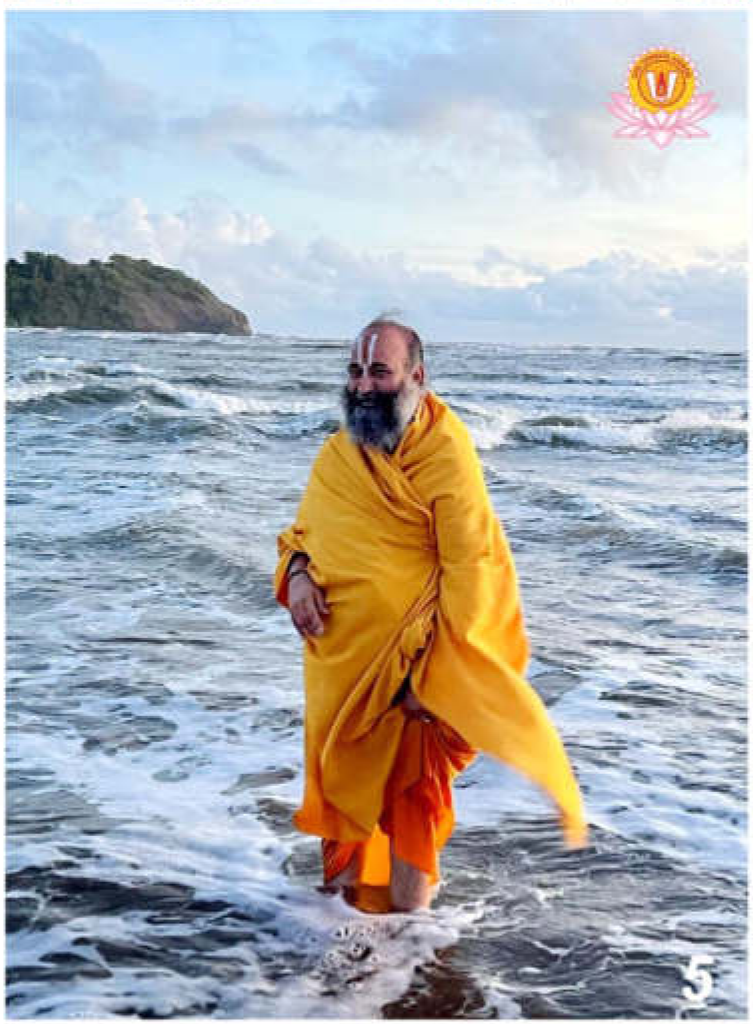

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/22-24
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 1st & 2nd day of every month

जिला उपायुक्त श्री जितेंद्र यादव जी पहुंचे गौशाला

हमारे परम पूज्य श्री गुरू महाराज जी अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में फरीदाबाद जिला उपायुक्त श्री जितेन्द्र यादव जी श्री नारायण गौशाला पहुंचे और उन्होंने यहां पौधरोपण किया। उन्होंने यहां गौओं की जानकारी ली और गौशाला में गोबर से स्टिक बनने की व्यवस्था पर भी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने मानव मात्र की सेवा में श्री सिद्धदाता आश्रम के योगदान की सराहना की।

"प्रवेश प्रारम्भ - प्रवेश सत्र 2022-23"

स्वामी सुदर्शनाचार्य एजुकेशन एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा संचालित

स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय

(सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा मान्यता प्राप्त)

स्वामी सुदर्शनाचार्य संस्कृत वेद विद्यालय

(महर्षि सांदीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा मान्यता प्राप्त)

प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी विद्यालय में प्रातः 09:30 बजे से सायं 03:00 के बीच आकर प्रवेश फार्म भर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया 20 जून 2022 से 23 जुलाई 2022 तक रहेगी। जिसमे अभ्यर्थी को 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। 24 जुलाई 2022 को आवेदक परीक्षार्थी की प्रवेश परीक्षा विद्यालय प्रांगण में प्रातः 10 से 1 बजे तक संपन्न होगी। अधिक जानकारी के लिये महाविद्यालय कार्यालय में प्रातः: 09:30 बजे से सायं 03:00 के बीच

8178535163, 7042246418

इन नंबरों पर संपर्क कर सकते हैं।

नोट : छात्र व अभिवावक 2 नवीनतम फोटो व आधार कार्ड की प्रति साथ अवश्य लाएं।

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) फरीदाबाद।

बडखल सूरजकुंड मार्ग सेक्टर-44, फरीदाबाद-121012 (हरियाणा) भारत

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–9 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–शकुन रघुवंशी